

प्रबोधचन्द्रोदयनाटक

जिसमें

नाटककी रीतिपर नट और नटी, काम और रति, विवेक और सुमति इनमें परस्पर अनेकानेक चित्रविचित्र वार्त्ता हुईहै उसका वर्णन है

जिसको

नाट्य रसरसिक पुरुषों के चित्त विनोदार्थ पण्डित भुवदेव दुबे गाढ़ा कोटासागर निवासिने देश भाषामें अति ललित बनाया है

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १८९३ ई० ॥

ोधचन्द्रोदयनाटक

प्रथम व द्वितीय भाग

जिसमें

विकार-मद और मदी-काम को
सुमति-दम्भ, दम्भशिष्य-अहंकार
ज्ञान-क्रोध, लोभ-तृष्णा, हिंसा-
इनमें परस्पर अनेकानेक विचि
वार्ता हुई है उसका वर्णन है

जिसको

रसिकपुरुषोंके चित्तविनोदार्थ श्रीि
देवहुवे महाकाव्यसागर निवासि ने
भाषामें अतिललित बनाया है

प्रथमबार

लखनऊ

किशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा
अप्रैल सन् १८९४ ई० ॥

अवर्णनीयहै जो बिनत्वकस्पर्शी है-बिनापदके गमनकर्ता
है बिनानेत्रों देखता है बिना श्रवणके सुनताहै बिना ना-
सिकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के
स्वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता
है जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय
वृंदाबनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों
की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो
कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है त-
थापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ
मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी
परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति
द्वारा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में
फंसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित राय-
रत श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूप-
तिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप
नाश होकर भूपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त
होवे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित
होजाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें
मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगना-
टक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—

हे नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परंतु मेरी बुद्धि
इसका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति
इस समय विषयासक्ति होकर शृंगार बीर रसमें फँसरही
है शांतिरस हृदयमें किसरीत प्रवेशकर सक्ताहैजैसे सूर्य
और रात्रि कदापि एकत्रनहीं होसक्ते वैसेही राज्यभोगमें
शांतिरस नहींआता और ये राजा संपूर्ण भूपमणि पुत्र
कलत्र मित्र सम्बंध्यादि राज्यैश्वर्यमें बंधरहेहैंतो एकही
बार इस प्रपंचसे कैसे निवृत्त होसक्ते हैं इसकाउपाय यही

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

र्ता—कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण बीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट-(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांव फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी--(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट—हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम ॰ परमानंदहै और अकल

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

[वा]र्ता– कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण बीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट–(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांय फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी–(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट–हे प्रिये जो प्रसिद्ध अविगत अविनाशी

सेकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के
चादलेताहै बिनाशरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता
जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय
ृंदाबनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों
ी कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो
ीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है त-
ापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ
ार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी
ंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति
करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में
ंसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित राय-
त श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूप-
ेके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप
ेनाश होकर भूपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त
ोवे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित
ोजाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें
ग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगना-
ुक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—
नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परन्तु मेरी बुद्धि
सका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति
स समय विषयासक्ति होकर शृंगार बीर रसमें फँसरही

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

वार्ता—कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण वीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट—(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांय फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी—(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट—हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम सर्वव्यापक परमानंदहै और अकल

सेकाके सूंघताहै विनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के
वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता
जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय
दावनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों
की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो
कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है त-
ापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ
ार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी
रंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति
का दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में
सकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित राय-
त श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूप-
के सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप
नाश होकर नृपतिको हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त
वे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित
जाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें
ग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगना-
क संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—
नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परंतु मेरी बुद्धि
सका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति
स समय विषयासक्ति होकर शृंगार वीर रसमें फँसरही

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

वार्ता– कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण बीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट–(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांव फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी–(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह वाणी किसने कही और उसमें क्या कहा–

नट–हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम सर्वव्यापक परमानंदहै और अकल अनीहअजअनंत भगवान्है जिसको नेति नेति कहि वेद गानकरते हैं और जिसकी आज्ञानुसार मायाने यहसंपूर्ण सांसारिक प्रपंचरचाहै और जो अगुण अनूप सर्वगुणरूप

है बिना नेत्रों देखता है बिना श्रवणके सुनताहै बिना नासिकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के स्वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता है जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय वृंदावनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है तथापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में फँसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित रायकृत श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूपतिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप विनाश होकर नृपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त होवे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित होजाता है इस बाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगनाटक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—

नटी—हे नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परंतु मेरी बुद्धि इसका अंतनहीं पासकी कारण कि महाराज की मति इस समय विषयासक्ति होकर शृंगार वीर रसमें फँसरही हैतो शांतिरस हृदयमें किसरीत प्रवेशकर सक्ताहैजैसे सूर्य और रात्रि कदापि एकत्रनहीं होसक्के वैसेही राज्यभोगमें शांतिरस नहींआता और ये राजा संपूर्ण भूपमणि पुत्र

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

वार्ता—कीर्तब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण वीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे परचात् नट कहता है)

नट—(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांय फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी—(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट—हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम सर्वव्यापक परमानंदहै और अकल अनीहअजअनंत भगवान्है जिसको नेति नेति कहि वेद गानकरते हैं और जिसकी आज्ञानुसार मायाने यहसंपूर्ण सांसारिक प्रपंचरचाहै और जो अगुण अनूप सर्वगुणरूप

सिकाके सूंघताहै विनामनके गुनताहैं विन जिह्वा के स्वादलेताहै बिनाशरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता है जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय वृंदाबनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो कीर्तब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है तथापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में फँसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित रायकृत श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूपतिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप विनाश होकर नृपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त होवे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित होजाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगनाटक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—

—हे नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परन्तु मेरी बुद्धि इसका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति इस समय विषयासक्ति होकर शृंगार वीर रसमें फँसरही हैसो शांतिरस हृदयमें किसरीति प्रवेशकर सक्ताहैजैसे सूर्य

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

र्त्ता– कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण वीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट–(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांव फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी–(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह वाणी किसने कही और उसमें क्या कहा–

नट–हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम ॰ परमानंदहै और अकल

अवर्णनीयहै जो बिनत्वकस्पर्शी है-बिनापदके गमनकर्ता
बिनानेत्रों देखता है बिना श्रवणके सुनताहै बिना ना-
सिकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के
स्वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता
जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय
दावनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों
की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो
कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है त-
थापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ
मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी
परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति
करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में
फंसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित राय-
त श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूप-
तिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप
केनाश होकर भूपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त
हो कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित
होजाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें
मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगना-
टक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—
नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परंतु मेरी बुद्धि
सका अंतनहीं पासकी कारण कि महाराज की मति
इस समय विषयासक्ति होकर शृंगार वीर रसमें फँसरही
है शांतिरस हृदयमें किसरीति प्रवेशकर सकाहैजैसे सूर्य
[illegible]

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्ति ब्रह्मराजा गुणालमंत्री साधु समागम नट समाज)

वार्ता—कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण बीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट—(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांव फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी—(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट—हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको सुखदायी सुखधाम सर्वव्यापक परमानंदहै और अकल

अवर्णनीयहै जो बिनत्वक्स्पर्शी है-बिनापदके गमनकर्ता है बिनानेत्रों देखता है बिना श्रवणके सुनताहै विना नासिकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के स्वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता है जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय बृंदाबनमें स्थितहुआ उसीने बिनावाणीके संपूर्ण दासों की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है तथापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में फँसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित रायकृत श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूपतिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप विनाश होकर नृपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त होवे कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित होजाता है इस बाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगनाटक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—

-हे नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परन्तु मेरी बुद्धि इसका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति इस समय विषयासक्त होकर शृंगार बीर रसमें फँसरही हैतो शांतिरस हृदयमें किसरीति प्रवेशकर सक्ताहैजैसे सूर्य

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रथमांक

नाटक पात्र ॥

(कीर्त्त ब्रह्मराजा गुपालमंत्री साधु समागम नट समाज)

वार्ता—कीर्तिब्रह्म महाराज की सभा में साधु समागम नामी नट अपर निज सहायक रूपयौवन गर्वित पुरुष स्त्री सहित संपूर्ण बीणा मृदंग सितार आदि यंत्रलेकर प्रवेश करते गान करनेलगे पश्चात् नट कहता है)

नट—(भुजा उठाकर कहताहै) अहो समस्त तंत्रीगणहो किंचित् समयपर्यंत यंत्रों को मौनकरके श्रवणकरो (फिर निज स्त्रीसेकहताहै) हेमृगनैनी कोकिलबैनी मेरीप्रिया आज महान् सुखदायक एक अद्भुत आकाश वाणी हुई है जिसके श्रवण करतेही मेरे शिरपर से अभिमान का भार गिरगया जिस से अब मैं पांव फैलाकर सुख पूर्वक सोताहूं—

नटी—(हंसकर)अहो प्राणपति प्रीतम कहिये वह बाणी किसने कही और उसमें क्या कहा—

नट—हे प्रिये जो पुरुषप्रकाशमय प्रसिद्ध अविगत अविनाशी जगत् प्रकाशी जिसके रोम रोम में ब्रह्मांड हैं और सबको

सिकाके सूंघताहै बिनामनके गुनताहै बिन जिह्वा के स्वादलेताहै बिना शरीरके सुंदरहै बिना वाणीके बोलता है जो निज दासोंके निमित्त ब्रजवासी सगुणरूप होय वृंदाबनमें स्थितहुआ उसीने बिना वाणीके संपूर्ण दासों की कामना पूर्ण होने के निमित्त यह कहा है कि जो कीर्तिब्रह्म नामी भूपति संपूर्ण राज कार्यानुरागी है तथापि उसने सांसारिक विषय मिथ्या समुझकर परमार्थ मार्गपर चरण रख मोह जालके तोड़नेकी अभिलाषाकी परंतु इसीअन्तर्गत में गुपाल मंत्री ने फिर राज्याशक्ति करा दिग्विजय करायदी तात्पर्य यह कि राज्य प्रपंच में फँसकर सतमार्ग को भूलगया इसहेतु तुम पंडित रायकृत श्रीकृष्ण भट्ट प्रकाशित प्रबोध चंद्रोदयनाटक भूपतिके सन्मुख गानकरो जिससे अभिमानादिकत्रयताप विनाश होकर नृपतिका हृदय शीतलहो शांतिकोप्राप्त होवै कारण कि पुष्पहीके प्रसंग में तिलतेल सुवासित होजाता है इस वाणीको श्रवण करतेही मैं सुख समुद्रमें मग्न होगया तिससे अब हे सुंदरी तू समस्त स्वांगनाटक संबंधी सज (यह सुनकर नटी कहती है)—

नटी—हे नाथ तुमने यह बहुत उत्तम कहा परन्तु मेरी बुद्धि इसका अंतनहीं पासक्ती कारण कि महाराज की मति इस समय विषयासक्ति होकर शृंगार वीर रसमें फँसरही है सो शांतिरस हृदयमें किसरीत प्रवेशकर सक्ताहै जैसे सूर्य

है कि समताको पकड़ सत्यको जाने सुख दुखको समान माने मान मोह अहंकार कामक्रोध को मेटै कुसंग छोड़ै समको साधै शब्दमें सुरतिलगावै शिरसे संतोंके समीप जावे इंद्रियोंको जीते सांसारिक आशाको त्यागे परब्रह्म परमेश्वर से स्नेहलगाकर उसीके दर्शनोंका अभिलाषी रहै आपाको मिटादेवे इस प्रकार शिरको देकर तमाशा देखे तब संत होताहै नहीं तो क्या दूधका बताशाहै और जो पुरुष काम क्रोध लोभादिक विषयों के आधीनहैं वह किस प्रकार शांतिको प्राप्त होसक्तेहैं—

नट—हे प्रिया तुमको इस प्रकारसे संदेह करना उचित नहीं है देखो बिना अधिकारी के कुछ करनहींसक्ते हैं—और यह मनस्त्री शरीर जिससे संपूर्ण साधना सुलभ हैं महान् दुर्लभहै वेद इसरीतिसे वर्णन करतेहैं कियहजीव सनातन परब्रह्म परमेश्वर का है परंतु—मायाके संयोगसे कुछफरक होगया और मायाके वसीभूतहोनेसे अनेकन योनियन में भ्रमण होताहै जब इसरीति ईश्वर जीवको भ्रमित औ श्रमित अवलोकन करताहै तब करुणाकरके यह नरतनु जो सर्व ज्ञानाधिकारी है देताहै इसको पाकर तीर्थव्रतादि शुभकर्म करना उचितहै यद्यपि बहुतकाल पर्यंत अभिमानादितम हृदयमेंरहतेहैं परंतु ज्ञानदीपके प्रकाशहोतेही दूर होजातेहैं और अब तो कीर्त्तिव्रह्म महाराज की सेनाने जब से सम्पूर्ण कर्म बधकर महाराज को शत्रुरहित करके प्रजा सुखदायी करदियाहै तबसे उनकी यहइच्छा है कि सत्संगको पाकर प्रभूके चरणों में प्रीतिबढ़ानी चाहिये जिससे विवेक भूपति मोह नरनाहका दल जीतकर प्रबोध सुतउत्पन्न करै—

(महांतके नटके बचन सुनकर परदाके
—भीनरमे काम का स्वांग बोलतला)

काम—(महान्क्रोधकरके) अरे हे नीच नट तूने यह क्याकहा अरे मूर्ख तू महाराज मोह का द्रोह कहता है विवेक की क्या सामर्थ्य है जो जीतसके कारण कि जिनके हमसरी से चढ़वायक हैं जिनके पुष्पहीके धनुष बाणहैं और संसारमें जितने स्त्री पुरुषहैं वह तो मेरेही गुणानुवाद के गानकर्त्ता हैं—और जगतमें जबलों मैंसजीवहूं तबलों मोह महाराज का सुखदायक हूं हमारे जीतेजी कौनऐसासामर्थ्यवानहै जो मोहको जीतसकै——

नट—(इतने वचन सुनतेही भयभीतहो निज स्त्री से कहता है) हे प्रिये यह काम महानबली और विजयी महाराजमोह का मुख्य सेनापति है और मोहके सुकार्यमें इसकी महान् प्रीतिहै इसको महादेवजी ने भस्मतो कियाथा परंतु नहीं हुआ औरइसने संपूर्ण संसारको जीतकर अपने वशमें करलियाहै इसीसे इसकीभय मुनीश्वर भी खातेहैं मैंने जो तुमसे मोहका हारना कहा उसीको सुनकर इसने ऐसा क्रोध किया है और संसारमें इसकी शंका सब करतेहैं इसहेतु अब अपुनको इहां रहना उचित नहीं है—

(इतना कह स्त्रीसहित नटभागा और परदासे काम रति सहित सभा में आया इस स्वरूप से)

सवैया—फूलनहीके दुकूल महाछबि भूषण फूलनके सुख धामते। फूलनको शिर गुच्छलसे अरु कंदुकफूलनके कर थामते॥ फूल शरासन शायकपाणि भुजारति ग्रीवर में रखवामते॥ ऐसो स्वरूप मनोभवको उठि आयो है मानोबसंतके धामते १॥

(प्रथम तो आतेही सभामें दोनों नृत्य करने लगे और नट समाज बतानेलगा फिर हंसकर स्त्री से कहता है)।

क-देखो हे प्रिया यह नीच नट सभको
ओर चलागया मेरेसन्मुख यह कहकर कि
महिपाल को जीतलिया कदापि वह इहांसे
होता तो आज मैं उसे मुख में भरलेता
रूपी तरवारके द्वारा संपूर्ण सांसारिक जड़
शरीर धारी मेरे वसीभूत हैं और देखो यह
सरति की है कि जिसकी बिचित्र मणि
णों की मूठ है जिसमें नथरूपी नथनी
सुडौल नेत्रोंकी अंजनरूपी मरसानसे
चींगई हैं और जिसकी यौवन अवस्था
उबटनरूपी मंजन से की गई फिर सुगंधरू
लकर घूंघटरूपी म्यान में रक्खी गई सो ज
की मेरी स्त्रीरूपी तलवार चमचमाती है उस
कौन सभ्यहै जो जगत में धैर्य धारण कर
भी यह बसंत समय जिसकी पुष्पवाटि
भ्रमर समूह गुंजार करते हुये मेरे यशगा
दीखते हैं फिर जिसकी शीतल मंद सुगं
विवेकियों का धैर्य विदीर्ण होजाता है औ
पराग के उड़तेही धैर्य ठहरही नहीं सक्ता कु
कोकिलों के सुनने से विवेककी सेनाके मु
फेर विचित्र मंदिरों अटारियों में चंद्र कि
रात्री और कभी मेघोंकी घमंड और दामिनी
तथा जलके बरसने से चातक मयूरादिकन
पवनकी झकोरोंसे वृक्षोंके डुलने से आभूष
की शोभासे केसर कस्तुरी इत्यादिकनकी सु
भोजनों से जलके प्रक्षालन से-दर्पणों के प्र
संगीतके अलापोंसे रागोंके मिलापोंसे मृदंग
से माति और सुरभेदोंके किवारों से कोमल

क स्पर्शसे तो मेरे ही मेरेरसकी उत्पत्ति सबके हृदयमें होतीहै इसी विभूती को संपूर्ण मनुष्य चाहते हैं जो कदापि यह सुख एकही क्षणमात्र जिसको प्राप्तहोजावे तो फिर उसके विचारमें विवेक क्याहै—ज्ञानकौनहै पुराण किसको कहते हैं प्रमाण किसका नामहै यह सत्यवचनमैं तेरे शिर पर हाथरखके कहताहूं—

रतिप्रीतमप्यारे आपवीरों में महावीरहैं और-आपकी प्रभुता संसार में ऐसीही है और मोहभी महान् श्रेष्ठ राजा दयालु है परन्तु विवेक महाराजको जो कठोर है मनुष्य महान् सधीर कहते हैं इनके परस्पर वैर स्वभाव होने से यदाकदा भलीबुरी बात होजायगी—

—(इतनासुन हँसकर कहता है) स्त्रियोंका स्वभाव सहजही सभयहोताहै यह मैंने निश्चय जानलिया इसी से तेरा हृदय कंपितहुआ परंतु कह तो सही त्रैलोकमें ऐसा कौनबली मेरे तुल्यहै जो मेरे बाणसे घायल नहींहै ऐसा कौन पुरुषहै जो स्त्रियोंके नेत्र कृपाणसे नहीं कटा इसके साक्षी वर्णन करताहूं सो श्रवणकरो प्रथम तो इंद्र जिसने मदांध होकर गौतम ऋषिका भेषलेकर उनकी स्त्रीसे छलकिया दूसरे चंद्रने गुरुपत्नीसे भोगकिया तीसरे जगत् पिता ब्रह्मा मेराबलपाकर निज कन्याके पकड़ने को दौड़ा फिर इतर सुर नर क्षुद्रजनों की क्या कथाहै ऐसा कौनहै जिसको मैंने कलंक नहीं लगाया और जिसको बांधकर मैंने मोहके स्वाधीन नहीं किया इसीसे महाराजको मेरा बड़ाही भरोसाहै और मुझे जीते बिना ऐसी किसकी सामर्थ्यहै जो मोह महाराजकी छांह दबासके जीतनातोदूर है तुम स्त्री स्वभावसे भयभीत होतीहो

आपको जीतसके तथापि नीतिमें ऐसाकहाहै कि शत्रुका हीन न समझे दोहा॥ शरि रोग रिपु अग्नि ऋण नृपति तपोधन व्याल।इतने गनियन छोटकरि सजग रहिय सब काल १॥और मैंने सुनाहै कि विवेक महाराजके साथ आठ मंत्री बड़ेही धीरवीर मतिके गंभीर स्वामिभक्तहैं उनमें से १ प्रथममंत्री यम है जिसके ये दश लक्षण हैं १ मनसा बाचा करके अहिंसा २ सत्यवचन ३ चोरी नहीं करना ४ ब्रह्मचर्य में दृढ़ता रखना ५ सहनशील होना ६ सर्व कार्य्योंमें धैर्यरखना ७ परमदयालुतालेना ८ मनसाबाचा कोमलचित करना ९ सर्वकाल पवित्ररहे १० मिथ्या अ-हार न करे २ द्वितीयमंत्री-नेम है जिसके ये लक्षणहैं १ जिह्वाके स्वाद न लेवै २ यथा लाभ संतोषरक्खे३सांसा-रिक सुखत्यागे ४ वेदमें विश्वासरक्खे ५ बिना फलकी इच्छाके दानकरै ६ सारवस्तुको ग्रहणकरै ७ वादाबिवाद न करै ८ संतों की कानमाने ९ लोकलज्जाका प्रमाण करे १० मानसी पूजनकरे ११ षोडश प्रकारसे प्रभूका ध्यानकरे १२ फेर जप में मौन रहकर अजपाका जपकरै १३ ज्ञानाग्निके बीचमें इंद्रियों का हवनकरे-३ तृतीय जममंत्री-उसके यह लक्षणहैं १ मनका निग्रहकरे २ योग का अभ्यासकरे ३ पद्मादिक आसन लगाय त्रकुटीमें दृष्टिराखै ४ पंचतत्त्वोंको साधकर मायाको निरोग करै-४चतुर्थ प्राणायाम मंत्री-इसको इड़ापिंगला सुषमना ना ड़ियोंमें होकर पूरक कुंभक रेचक करके ध्यानकरै-५पंचम मंत्री प्रत्याहार इसका यह लक्षणहै कि पांचों ज्ञानेन्द्रियों

धीर और तेजस्वी है--इसमें परमेश्वर और गुरुके चरण कमलों को नेत्र मूंदकर अवलोकन करतारहै--८ अष्टम मंत्रीसमाधि है--इसपै सांसारिक उपाधि मेटनेपर आया तो मिटजाताहै फिर स्वामी और सेवकका भावनहीं रहता है और कालका स्वभाव भी व्याप्त नहीं होता है--

(ऐसेसमयरतिके वचनसुनकर)

-(हँसकर कहताहै) हे प्रिये यह मंत्री मैंने आज पर्यंत नहीं सुने थे परंतु अब महावीर बलवान जिन्होंने संसार को जीतकर मोहके स्वाधीन करदिया है उनका वर्णन सुनो--१प्रथमकाम--मैं ऐसाहूं कि जिससे सम्पूर्ण जक्त स्त्री रूपी रस्सी से बँधाहुआहै सुर नर असुर नाग पशु पक्षी कीट इत्यादि मेरेही मदसे अंधेहैं और जपीतपी संन्यासी मुनिवर परम विज्ञानमान जो विवेकके सन्मानसे बनही में वासकरते हैं उनको भी यदि स्वप्नान्तरमें स्त्रीका स्मर्ण आजाताहै तो विवेक की आकन छोड़कर मेराही यश गांण करने लगतेहैं--और जिनके स्थान नवयोवन स्त्री है वहतो मानों बिनादामों के मेरे चेरेहीहैं-२द्वितियक्रोध--जिसको अवलोकन करके विवेककी सेना दबती है और जिसके वशीभूत होकर संपूर्ण नरनारी विपरीत कहते और करतेहैं--३तृतियहिन्सा--अत्यंत भयंकर है ४चतुर्थ लोभ--महाराज मोहके समीप सुशोभित है जिसके स्वाधीनहोय सम्पूर्ण मनुष्य परमदीन अनाथसरी से फिरते हैं--५पंचममद--इसके समान दूसरा कोईनहीं है--६षष्टम मत्सर--इसका यह प्रमाण है कि दूसरे की बुराई देखकर बड़ाहर्षहो बहुतही कुटिलताई सुहावै दूसरेकी निंदाकरता रहै और कहांतक वर्णनकरूं सम्पूर्ण तनधारी इसीके आज्ञाकारी हैं मानों इसी के हाथ बिकचुके हैं--७सप्तमदंभ--यह महानछली जिसका अभ्यंतर मलीनहै परंतु बाहरसे

परमउज्ज्वल बक सदृश मछलीका प्राणग्राहकहै इसकी वाक् रचनाके वशीकरनमें संपूर्ण जक्तके स्त्री पुरुष चकृत होरहेहैं--८ अष्टम झूठ--इसमें तो मानों संपूर्ण संसारही लिपटरहा है जिससे जीव अनुमान व्यवहार अर्थ अनर्थ में ही बिना झूंठके कुछ बोले भी नहीं हैं —

सो हे प्रिये यह संपूर्ण मन्त्री ऐसेप्रबल हैं कि इसमें से एक एक संसारको जीतसक्ता है जिनके भय से ब्रह्मादिक सशंकित हैं और मुनि तो भयभीतहो बनसे वन करते हैं जो कदापि हम संपूर्ण एकत्र एक चित्तहोयँ तो बिवेककी कितनी समाज है (जब इसरीतिसे मोहके मंत्रियोंका बर्णन कामने किया तब रति फिर पूंछती है) —हे प्राणपति सुनतेहैं कि बिवेक और मोह दोनों एकही कुलमें उत्पन्न हुये हैं इसका सविस्तर बर्णनकरो—

--हे प्रिये जो तुमने कहा यथार्थ में ऐसाही है एक कुल क्या येतो एकही पितासे दोनों भाई उत्पन्न हैं अब इन सहोदर भ्रातोंके बंशका वर्णन करताहूं सो सुनो जो ईश्वर सर्बघट निवासी अबिनासी स्वयं बिलासी है और जो जानानहीं जाता परंतु जिसकी प्रभुता सबकी सहायकहै और जिसको निर्गुण निराधार आकार रहित कहते हैं जिसकी अपारताका पार ब्रह्मा शिव शारदाशेष नारदादि गुण गांण करने पर भी नहीं पाते हैं ऐसा जो सर्व ब्यापीक ब्रह्मत्रिभुवन पति है उसने जब किंचित भृकुटीका बिलास मायाकी ओर फेरा तो उसीसमय प्रकृति ने गर्भको पाकर मन नामिक पुत्र उत्पन्नकिया जिसको आत्मा भी कहते हैं और मन और आत्मा में शरीरऔर परछाहीं समान कुछ भेद नहीं समझो वही मन संपूर्ण जक्तका राजाहुआ और स्वर्ग नर्क जिसके स्थानहुये तिसके प्रवृत्ति और निवृत्ति नामिक दो रानी हुईं तिनमें से

प्रवृत्तिके गर्भसे मोहादिवीर उत्पन्न हुये और निवृत्तिसे विवेकादि सधीरहुये--

-हे पति यहदोनों एकही पिताके पुत्रहैं परंतु किसकारण से इनमें परस्पर बैरबढ़कर अब ये दोनों युद्धको चाहतेहैं-

-हे प्रिया यह सदैव कालकी रीति है कि देश कोषके निमित्त भाई भाई से बैर करता है इसका कारण यही है और महाराजाधिराजा जो मन दोनों राजों का पिता है जिसकी आन और बल प्रताप त्रैलोक में सब प्रकार से है तिस मन महाराजके अनुगामी हमारे स्वामी मोह राजा हैं और सदैवकाल अपने मंत्रियों सहित मनही के रुखको देखते रहते हैं जो कुछ इच्छा मनकरते है उसको मोहराज उसी समय सिद्धकर देते हैं इसी से मनमहाराज ने मोहको संपूर्ण लोकों की ठकुराई देदी है और बिवेकराज मनकी आज्ञामें नहीं है इसहेतु विवेक का निरादर होकर किंचित प्रभुता मिली और सदैव संपतिहीन रहते हैं अब मोहराज का बिभव बिलास देखकर ईर्षावश विवेक बिनाश चाहते हैं--

--(इसप्रकार बंधुबिरोधसुन रतिहृदयमें पछिताय कोमल बाणी से बोली) हेपति इनके परस्पर बिरोध का ऐसा भारी कोईकारण नहीं था जैसी ये अपनी २ विजय चाहते हैं इसे मनराजके कुलको कोई समयमें विपरीतहै इस बंधुविरोधका परिणाम कुछ अच्छा नहींहै यहविरोध कुल नाशलेनेका मानो अंकुर जमाहै अब हेप्राणपति मुझको समुझायकर कहिये कि जो आपने कहाहै कि बिवेक बलहीन देश कोष रहित मनुष्योंसे तिरस्कारितहै तो किसके बलसे बैरकरताहै-

• हेरति तुमने जो बातपूछी उसके समुझनेसे मेराशरी

निषद नाम स्त्रीहै तिससे ऐसा सुनाहै कि मेरे कुलनाशिक दो बालहोवेंगे अर्थात् पहिली विद्यानामिक कन्या महान राक्षसी भेषसे मोहके कुलको अवश्य भक्षण करेगी उसीका बलपाकर विवेकके मंत्री महान बली होजावेंगे तब समयको पाकर इसरीतसे विवेक राजजीतेंगे—

—(इतनी बातके सुनतेही रतिका पीला मुखहोय नेत्रों से अश्रुपातहोते महान बिह्वल अचेत मूर्च्छित पृथ्वीपरगिरपड़ी तबकामने दौड़कर अंकमें भरलिया और हृदय में लगाय समुझानेलगा कि हेप्रिया जिसको सुनकर तुमने इतनी भयमानी उसका अभीतक यही निश्चय नहीं है कि सत्यहै अथवा असत्य तुम वृथा शोच मतकरो क्या जानैं ऐसाहोयगा कि नहीं और जबतक मै संसारमें जीता हूं तबतक मोहके दलको कौनजीतसक्ता है——

रति०—हेपति विद्याके दुस्सहगुण सुनकर हृदय कांपताहै अब कहिये उपनिषदमे दूसराबालक कौन लेयगा——

काम०—हे प्रिया तुम श्रवण करो यह संसारमें प्रख्यातहै कि जो छलसे दूसरोंको कूपखनतेहैं वे उसी में गिरते हैं इसीप्रकार बिवेक हमारा नाश चाहतेहैं सो वही उसका फल पावेंगे फिर हे,प्रिया दूसराबालक दोष सहित मनके कुल रूपी सुंदर कमलों के बनको हिम सदृश प्रबोध चंद्रोदयनामिक महानदुःशील दुर्गुणी उसके जन्मतेही कुलका अंतजानो और मंत्रिन सहित बिवेक का भी नाश होजायगा——

रति०—(बिलखाय कर कहती है) सहस्र धिक्कार है ऐसे कुल को जिसमें ऐसा पुत्र उत्पन्न होय परंतु हे प्रीतम विद्या और प्रबोध चंद्रोदयको आपने दुष्टकहा और साधु जन उनको सुकृती कहते हैं इसको हम कैसाजानें——

काम०—हे प्रिये जिन खोटे पुरुषों का चित्त परदोषमें

से मलीन प्रत्यक्ष में उज्ज्वल रहताहै उनका गुण अंतमें उन्हीं को दुखदाई होताहै जिस रीति ओलाकृषीको गलाय आप गलजाता है और जैसे अग्निसे धूम होताहै वही समयको पाकर जल होय अग्निको बुझा देता है (इस प्रकार जब कामने कहा उसी समय में पटके अभ्यंतरसे विवेक के स्वांग ने रिसायकर काम से यहकहा कि अरे हे मूर्ख गँवार काम तू ऐसा मिथ्या भाषण किस हेतु करताहै अरे हे मलिन कुमार्गगामी तूने संपूर्ण संसार को अंध और दीन कर दिया है और मैं किसप्रकारसे हे मूढ़ बाहिर से उज्ज्वल अरु अभ्यंतर से मलीनहूं और जो कदाच मैं पिताके वचन नहीं मानता यह सत्यहै तोभी संत पुरुष ऐसी नीति कहतेहैं कि मातापिता भाई गुरू स्वामी अथवा कोई भी सजातिहो जो गुण और दोष का ज्ञान न करै और अपनी हानि औरलाभ को न जाने निज कुलकी मर्यादको त्यागदे कुसंग और कुमार्ग में चले और जिन पुरुषोंके सतसंग में नर्कादिक होते हैं उनसे जो भयनहीं खाता तिसको पंडित जन कहतेहैं कि शत्रुके समान त्यागदे और यह मन महाराज जो बड़ेके पुत्र हैं तिन्होंने आपा आप बिसराय कर कुसंगति धारणकी ओर देख एकमुष्टि मृत्तिका का जो शरीरहै तिसको मन कहता है कि मेरा शरीर अत्यन्तही सुन्दर है जिसके आदि अंत मध्य में दुखका भोग है और जिसको जानने से केवल भस्म विष्ठा और कृमअंतमें परिणाम दृष्टि आता है और विषयका भोग ऐसा है जैसे दाद के खुजलाने से प्रथम सुख फिर अंतमें दुख होता है परंतु उसी में विश्राम मानता है तिसपर भी अपना स्वरूप त्याग इंद्रियोंके वशीभूत होय कुसंगानुरागी होगया इसमें इसका क्या कामथा किसप्रकार जैसे

निषद् नाम स्त्रीहै तिससे ऐसा सुनाहै कि मेरे कुलनाशिक दो बालहोवेंगे अर्थात् पहिली विद्यानामिक कन्या महान राक्षसी भेषसे मोहके कुलको अवश्य भक्षण करेगी उसीका बलपाकर विवेकके मंत्री महान बली होजावेंगे तब समयको पाकर इसरीतसे विवेक राजजीतेंगे--

-(इतनी बातके सुनतेही रतिका पीला मुखहोय नेत्रों से अश्रुपातहोते महान विह्वल अचेत मूर्च्छित पृथ्वीपरगिरपड़ी तबकामने दौड़कर अंकमें भरलिया और हृदय में लगाय समुझानेलगा कि हेप्रिया जिसको सुनकर तुमने इतनी भयमानी उसका अभीतक यही निश्चय नहीं है कि सत्यहै अथवा असत्य तुम वृथा शोच मतकरो क्या जानैं ऐसाहोयगा कि नहीं और जबतक मैं संसारमें जीता हूं तबतक मोहके दलको कौनजीतसक्ता है——

[र]ति०—हेपति विद्याके दुस्सहगुण सुनकर हृदय कांपताहै अब कहिये उपनिषदसे दूसराबालक कौन लेयगा——

काम०—हे प्रिया तुम श्रवण करो यह संसारमें प्रख्यातहै कि जो छलसे दूसरोंको कूपखनतेहैं वे उसी में गिरते हैं इसीप्रकार विवेक हमारा नाश चाहतेहैं सो वही उसका फल पावेंगे फिर हे प्रिया दूसराबालक दोष सहित मनके कुलरूपी सुंदर कमलों के वनको हिम सदृश प्रबोध चंद्रोदयनामिक महानदुःशील दुर्गुणी उसके जन्मतेही कुलका अंतजानो और मंत्रिन सहित विवेक का भी नाश होजायगा——

[र]ति०—(बिलखाय कर कहती है) सहस्र धिक्कार है ऐसे कुल को जिसमें ऐसा पुत्र उत्पन्न होय परंतु हे प्रीतम विद्या और प्रबोध चंद्रोदयको आपने दुष्टकहा और साधु जन उनको सुकृती कहते हैं इसको हम कैसाजानें

से मलीन प्रत्यक्ष में उज्ज्वल रहताहै उनका गुण अंतमें उन्हीं को दुखदाई होताहै जिस रीति ओलाकृषीको गलाय आप गलजाता है और जैसे अग्निसे धूम होताहै वही समयको पाकर जल होय अग्निको बुझा देता है (इस प्रकार जब कामने कहा उसी समय में पटके अभ्यंतरसे विवेक के स्वांग ने रिसायकर काम से यहकहा कि अरे हे मूर्ख गँवार काम तू ऐसा मिथ्या भाषण किस हेतु करताहै अरे हे मलिन कुमार्गगामी तूने संपूर्ण संसार को अंध और दीन कर दिया है और मैं किसप्रकारसे हे मूढ़ बाहिर से उज्ज्वल अरु अभ्यंतर से मलीनहूं और जो कदाच मैं पिताके बचन नहीं मानता यह सत्यहै तोभी संत पुरुष ऐसी नीति कहतेहैं कि मातापिता भाई गुरू स्वामी अथवा कोई भी सजातिहो जो गुण और दोष का ज्ञान न करै और अपनी हानि औरलाभ को न जाने निज कुलकी मर्यादको त्यागदे कुसंग और कुमार्ग में चले और जिन पुरुषोंके सतसंग में नर्कादिक होते हैं उनसे जो भयनहीं खाता तिसको पंडित जन कहतेहैं कि शत्रुके समान त्यागदे और यह मन महाराज जो बड़ेके पुत्र हैं तिन्होंने आपा आप बिसराय करकुसंगति धारणकी और देख एकमुष्टि मृत्तिका का जो शरीरहै तिसको मन कहता है कि मेरा शरीर अत्यन्तही सुन्दर है जिसके आदि अंत मध्य में दुखका भोग है और जिसको जानने से केवल भस्म विष्ठा और कृमअंतमें परिणाम दृष्टि आता है और विषयका भोग ऐसा है जैसे दाद के खुजलाने से प्रथम सुख फिर अंतमें दुख होता है परंतु उसी में विश्राम मानता है तिसपर भी अपना स्वरूप त्याग इंद्रियोंके वशीभूत होय कुसंगानुरागी होगया इसमें इसका क्या कामथा किसप्रकार जैसे

सिंहका बच्चा बकरियोंमें रहकर भैंभैं करनेलगा और निज स्वरूपको बिसराय कर उन्हीं के लक्षण धारण कर लिये परंतु यह नहीं समुझता कि ये सबमेरे लक्षण हैं इसी प्रकार यह मन इंद्रियोंके संग भ्रमरूपी बेड़ी से बँधाहुआ निज रूपत्याग सिंहपुत्र सदृश बकरियों में बकरी हुआ फिरता है और एक बड़ा अपराध हमारा पिता करता है जिसे पिता दुखपाते हैं परंतु उसको नहीं समुझते अर्थात् आत्मा जो हमारा प्रपिता इसमनका पिताहै तिसने पुत्रकेनाते से मनसे अत्यंत स्नेहबांधा है और मनहीं के बशीभूत होय वर्त्तते हैं इसी हेतु अपार संकट और शोच सहताहै इसको दोष नहीं समुझता ऐसा मोहांधकारमें पड़ा है और इसबातको किंचित हीन समुझ कर आत्मा मुझसे दुख सहताहै--
इसीसे मैं पिताको त्यागकर दूर रहताहूं सो हे क्रूर काम कहु मैं किस प्रकारसे मलीन चित्तहुआ--
(इसी समय सभामें जो रतिसहित कामनृत्य करताथा सो सुनकर चकित रहगया और रतिके कानों में कहने लगा कि विवेक महाराज यही हैं कैसे दुर्बल शरीरसे भी महान काष्ठ सहित कैसा कठिन तप करते हैं सो जो बातें मैं तुमसे करताथा उसको श्रवणकरके सुमति नामिकरानी सहित इस भूमिमें आये और ये बड़े कुल में उत्पन्न हुये हैं और हमसे इनकी बड़ी पदवी है इसकारण हमको इनके सन्मुख होना उचित नहीं है इस से यहां से चलो भगचलें)
(इतना कह रति सहित कामको भेषगया और सुमति सहित विवेक महाराजके स्वरूपका आगमनहुआ)
-परम पुनीत प्रशस्त अति महा तपोधनरूप । राजहंस जोरी मनो मति से बोले भूप १

विवेक०--हे प्रिया यह तमाशा तो देखो काम हमसे कैसी बातैं कहकर चलागया है जिसके श्रवणसे दुख और हँसी आती है अर्थात् मुझसे तो पिताज्ञाभंग कुमार्गगामी कहता है और अपुनको पितुभक्त सुकृती वर्णन करताहै--

सुमति०--हे महाराज आप तो नीति चतुर वेद शास्त्रादिकनके उत्तम प्रकारसे जनवाहो और इस संसारमें बहुतक पुरुष ऐसे हैं कि जो अपनी कुबुद्धि और अज्ञानता से निज अघको न देखकर सुखी साधुवोंमें देखते हैं कारण कि श्रीकृष्णचंद्रजी को मणिके चोरी का कलंक सोहताथा परंतु जिनके धर्मलज्या नहीं है वे मूर्ख ऐसाही सदा बोल देते हैं और जिनके अपनी ही कर्तव्यकी रीझबूझ है वे पुरुष दूसरे का उपदेश नहीं मानते हैं तिस के साक्षीहरि और दुर्योधन हैं और जो कोई चंद्रके ऊपर धूल फेंकताहै वह उलटकर उसीके मुखपर गिरती है इसी रीति वह अपना किया हुआ आप पायेगा और आपका सुयश और प्रताप तो संपूर्ण पृथ्वी पर प्रख्यात है—

विवेक०—हे सुमति तुम देखो यह मुझको परीक्षाहै कि जो परम सुंदर मन महाराज मेरे पितातेजके राशिजक्तके प्रकाशक हैं सो उस अनादि अनंत अगोचर अपार निर्विकार अखंडित प्रकाश सच्चिदआनंद राशि अतर्क अगाधि पूर्णप्रकाश मनसा वाचाकरके अगम्य जिसकी भृकुटीके विलाससे संसार होताहै ऐसेपरब्रह्म परमेश्वरका पुत्रहै सो मन ऐसा उत्तम होकर इसमहान मंद मोहके वशीभूत होकर नट कैसानट्टा हुआ फिरता है और मनने इस संगति में पड़कर परमोत्तम विभूति को विसर्जन करदीहै और विषय सुख में ऐसा भूला फिरता है जैसे कोई कामधेनुको छोड़कर अर्ककादोहन करताहो और ऐसा अपने को बिसराया है कि रचक मात्रही निजस्व-

रूप को नहीं बिचारते और जो कामादिक मोहके मंत्री हैं वे तो अत्यन्तही दीर्घ पाप करते हैं उनको तो कुछ लज्याभी नहीं है--सो ऐसा निर्मल पुनीत पुरुष जिसकी परम पवित्र शुभ गीता है तिसको मोहने ऐसी अनीति पढ़ाईहै जिसकी विपरीतता वर्णन नहीं करसक्के और उसी के वशीभूत होने से अविवतापादिक संकष्टसहते हैं ऐसा साधुजन कहते और हमभी देखते हैं कि नेत्रहोने पर भी कुछ नहीं देखते सो हम उनको इस दुखसे छुड़ाया चाहते हैं तिस से उसने हमको छली बनायाहै--

सुमति०--हे महाराज जो आपके सुयशकी कीर्त्ति है वह दूसरे राजोंको नहीं सोहती है उसके करने को कामकी क्या सामर्थ है यह तो निज स्वारथी है परमार्थ को क्या जानै और उससें जो औगुणहैं उनको वह अपने में न समुझकर साधुओंमें जानता है ऐसा मूर्ख है कि बातोंहीकी रचनाको हृदयमें मानता है और हगहीन के दोषको न सुनताहै न मानताहै परंतु जो आपने मनका स्वरूप अनूपवर्णन कियाहै और अनंत महिमाहै जिसकाप्रकाश संसारमें फैलाहै तिसने कौन योगकरके मोहके बशीभूत होनेकी मूर्खता की यहगूढ़बात मेरे समुझ में नहीं आती

विवेक०--हे सुमति तुमश्रवणकरो स्त्रियों की पुरुषों को संगतिही दुखकी दाता है संशयरूपी शूल शोक भ्रमादिक जो कुछ है सो संगतिही से होता है और माया के अंश से जक्त में स्त्री है इससे वह अवश्य पुरुषों के चित्त में भ्रम उत्पन्न कर देती है और जब पुरुष स्त्रीका संग पाताहै तब ऐसा क्या अनुचितहै जो उसको नहीं भाताहो और निजस्वरूप जो सुखका मूलहै उसको मायाके संगतिसे भूलगयाहै और दुखके दाता जलसे दिनरात जलकर कोटिन संकट बहुत प्रकार के सहिता है जैसे अत्यंत

पवित्र गंगाजीका जल संसारको पवित्र करताहै परंतु वही कलार का संग पाकर मदिरा होजाताहै—

सुमति–हे महाराज जो आपने वचनकहे वह प्रमाणिकहै परंतु जो रूपका अपार समुद्र निर्मल उजागरहै और जिसका सहस्र सूर्यके सदृश प्रकाशहै उसके सन्मुख हे महाराज किंचित् माया का अंधेरा क्या करसक्ता है–

विवेक–हे सुमति तुमने जो यह पवित्राचरणकहे सो ठीकहै परंतु उसमायाकेलक्षण श्रवणकरो यहमाया सत्यपुरुषसे अजान दासीहुई तथापि उसका प्रभाव अमित आश्चर्यमयहै जिसका कोई पारनहीं पासक्ता कारण कि वह एकपल में कोटिन ब्रह्मांडको रचकर नाशकर सक्ती है और अनेकन विचित्र चरित्रों गुणकरके संपन्न है तिसे यहआदि पुरुषकी माया सबको भ्रमासक्तीहै और वहपुरुष आद्यंत कैसा स्वच्छमणिसदृश उज्ज्वल अभंग एकरंगहै और जैसे मणिके नीचे श्याम पीत लालहरित जैसा रंग रक्खो उसीप्रकार दिखनेलगतीहै परंतु विचार के दृष्टिसे देखाजाय तो उसके निर्मल ज्योतिमें किसी प्रकार का विकार नहींहै जैसे मुकुरमें सब दिखतेहैं परंतु आैना सबसे अलगहै इसीरीति मायाका संग और रंग उसपुरुषको नहीं लगताहै–

सुमति–हे प्राणवल्लभ आप सर्वज्ञहैं इससे मेरे संदेहको निवारण करिये कि यहजीव उसआदि पुरुष आनंदकी राशि का अंशजहै इसे यहभी अविनाशीहै परंतु किसकारण से मायाने उसको ऐसे सुख समुद्र से विलगकरदिया और संशय सागरमें डालदिया जिसे अनेकन प्रकार के क्लेश सहिता है और एक पलभी विश्रामनहींपाता और व्याकुलतासे ऐसा भ्रमण करताहै कि कहीं स्थल भी नहीं मिलता–

विवेक--हे सुमति इसमायाके शुभ चरित्र अवर्णनीय हैं कारण कि जितना मूल है सो सब इसी का है ऐसी अद्भुत गुणकीखानि है तिस मायाने अपने विचार से जब देखा कि यह आदिपुरुष प्रशंसनीय सबविधसे सबसे बड़ा पवित्र सामर्थ्यवान् अत्यन्तशूरहै सो जो कदाचित् मेरेऊपर अनुग्रहकरे और इनसेपुत्रहोवे तो उसको त्रैलोकका राजाकरूं ऐसा मनोरथ मायानेकरके उसपुरुषसे रतिकी यह ऐसी अकथवार्त्ता है कि मायाकी कामना पूर्णहुई और उसीके अंशसे जीवनामिकपुत्र मायाके गर्भसे सुन्दर उत्पन्नहुआ उसके निमित्त अनेकनप्रकार के मन्दिर पंचतत्त्व करके नवनवद्वार रखकर सुशोभित किये और जितने लक्षण मायामेंथे सो मायानेउसको सब सिखलादिये तब जीवने बड़ीलालसासे सुख दुःख सहित त्रैलोकका राज्य किया—

सुमति—हे महाराज जो आपने कहा सो सत्य है माताके जो शुभ और अशुभ गुणहोतेहैं सो पुत्रमें दिखायपड़ते हैं-

विवेक—हे दूरदर्शी सुमति उसरूपकीराशि पुरुष और मायासे इसजगतका प्रकाशहै और उसीजीवसे मनहुआ तिस की पहिली रानी प्रवृत्तिनामी है उसके वंशका वर्णन सुनो जैसेसूर्यकाप्रकाश दर्पणमें और दर्पणकाप्रकाश जैसे जल और जलके प्रकाश से मन्दिरमें उजालाहोताहै वैसेही परमात्मासेआत्मा आत्मासेमन और मनसे सांसारिकविलासहै परंतु इसकासाक्षी परमात्माअखंडित सबके बीचमें और सदैव सबसे अलग आनंदकी राशि है सो आत्मा ऐसे परमात्मा को भूलकर मनसे बँध कर मनहीके दुखसोंदुखी और मनहीके सुखसेसुखी है तिस मनके प्रवृत्तिसे अविद्यारूपी कन्यासहित अहंकार पुत्रहुवा उनसे मनकी अधिक प्रीति ऐसी हुई कि एक

छिनभी अलग नहींकरता और उन्हीं के रस में मग्न होकर मनने अपनेपिता आत्माको विसराय दिया अब उन्हींके साथ प्रीतिकेवशीभूतहो जड़तारूपी सेजपर अपनारूप भूलकर दीर्घनिद्रा में पड़ाहै और जैसे जो सोताहै सोस्वप्नमें जैसेकुछपावै अथवाकिसीसेलड़ै फेर जगनेपर उसका विश्वासनहीं करता उसीप्रकार मन अहंकारके संगसोते में कराल स्वप्नदेखरहा है और यह स्वप्न ऐसा है कि जिसमें सती और यती और मुनि और राजा और रंक सब चौदालोकों में फिरतेहैं और सपनेहीमें यह कहिते फिरतेहैं कि यह मेरे पिता और माता और भाई स्त्री पुत्र धाम और ग्रामहै और उसी स्वपनेमें संसारसमुद्र में बहिता फिरताहै उसी में पैरता थकता बूड़ता उखरता है परंतु जबतक जगतानहीं तबतक आपुही जानतानहीं है और देखो आपही तो देखता है और आपही उसमें मग्न है ॥

-आप बिसार्यो आपको आपुहि पर्योकवात।
आपुहि तो दूलहबन्यौ आपुहि बन्योबरात १॥

-हे महाराज आपका पितामन अहंकार और प्रेमके वशीभूतहोने से बावला होगयाहै सो यह भेद मैंने आज जाना कि मनने इस निद्रामें सुखमाना है इसी कारण इस असत् संसारमें हठकरके प्रतीत करताहै तिस्से अब हेमहाराज ऐसायत्न करना उचितहै जिससे यहमनजग कर स्वप्नको स्वप्नजानकर अपना निज चेतन रूप पहिचान लेवे (जब रानीने ऐसे वचन कहे तब विवेकराज सशोचहो मस्तकको नीचेकर इसका कुछ उत्तर नहीं देतेहुये)

विवेक--हे सुमति इसमायाके शुभ चरित्र अवर्णनीय हैं कारण कि जितना मूल है सो सब इसी का है ऐसी अद्भुत गुणकीखानि है तिस मायाने अपने विचार से जब देखा कि यह आदिपुरुष प्रशंसनीय सबविधसे सबसे बड़ा पवित्र सामर्थ्यवान् अत्यन्तशूरहै सो जो कदाचित् मेरेऊपर अनुग्रहकरे और इनसेपुत्रहोवे तो उसको त्रैलोकका राजाकरें ऐसा मनोरथ मायानेकरके उसपुरुषसे रतिकी यह ऐसी अकथवार्त्ता है कि मायाकी कामना पूर्णहुई और उसीके अंशसे जीवनामिकपुत्र मायाके गर्भसे सुन्दर उत्पन्नहुआ उसके निमित्त अनेकनप्रकार के मन्दिर पंचतत्त्व करके नवनवद्वार रखकर सुशोभित किये और जितने लक्षण मायामेंथे सो मायानेउसको सब सिखलादिये तब जीवने बड़ीलालसासे सुख दुःख सहित त्रैलोकका राज्य किया—

सुमति—हे महाराज जो आपने कहा सो सत्य है माताके जो शुभ और अशुभ गुणहोतेहैं सो पुत्रमें दिखायपड़ते हैं-

विवेक—हे दूरदर्शी सुमति उसरूपकीराशि पुरुष और मायासे इसजगत्का प्रकाशहै और उसीजीवसे मनहुआ तिसकी पहिली रानी प्रवृत्तिनामी है उसके वंशका वर्णन सुनो जैसेसूर्यकाप्रकाश दर्पणमें और दर्पणकाप्रकाश जैसे जल और जलके प्रकाश से मन्दिरमें उजालाहोताहै वैसेही परमात्मासेआत्मा आत्मासेमन और मनसे सांसारिकविलासहै परंतु इसकासाक्षी परमात्माअखंडित सबके बीचमें और सदैव सबसे अलग आनंदकी राशि है सो आत्मा ऐसे परमात्मा को भूलकर मनसे बँधकर मनहीके दुखसोंदुखी और मनहीके सुखसेसुखी है तिस मनके प्रवृत्तिसे अविद्यारूपी कन्यासहित अहंकार पुत्रहुवा उनसे मनकी अधिक प्रीति ऐसी हुई कि एक

कदाच श्रद्धा मेरीओरसे उसकेपास जावे और मृदु
चनों से मेरा अभिलाष उसको जनावे और विनती
मान छुड़ाय उसको मुझसे मिलादे फिर उसके आने
हे प्रिया तुमको मान न होवे और उसके और मेरे रह
में किसीप्रकारका विघ्न न पड़े इसीकारण जाग्रत् स्व
सुषुप्ति जो तीनअवस्था तुम्हारेस्थानमें हैं इनमें तुम्हा
राज रहकर चतुर्थ तुरीय अवस्था में उपनिषद्को ले
कुछ दिन जो मैं रहूँ तो कर्त्ताकी कृपासे यह आशा
कि अवश्य प्रबोधचन्द्रोदयनामिक पुत्र महान् धीरज्ञा
गुणवान् आनन्दकीराशि शूरवीर सुजान चन्द्रसदृ
होगा वही मनकी नींदको मोहरूपी रात्रीसे जगाय
मिटा देगा॥

सुमति–हे नाथ जो इसप्रकारसे शील समुद्र पुत्र उत्पन्नहोवे त
मनआपकेवशहोजायगा और मैंभीबड़भागिनी होवँग
और हे प्राणप्यारे आपको पिताका उपकार करना उ
चितहै और मैं तो आपकी आज्ञामेंहूँ इससे शीघ्रही श्र
द्धाको उपनिषद्के समीप भेजिये सो मनायल्यावे औ
आप उनसे हठकर प्रीति कीजिये ऐसी नीतिभी है औ
शुभकार्यको विलम्ब न करना चाहिये क्योंकि भीज
पर कमल भारीही होताहै॥

विवेक–(ऐसे वचन सुनकर अत्यन्त हर्ष से कहते हैं) हेसुम
अब जो तुम मेरी सहायक हुईहो तो सम्पूर्ण कार्य वि
नाही प्रयाससे सिद्धि होजावेंगे और हे प्रिये अब ज
यह मन परमात्माका पुत्र निद्रावशहो स्वप्न देखता
इसको ऐसी निद्रा उचित नहींहै यह फल अहंकारका
दूसरे मोहभी बहकाता रहताहै तीसरे कामादिक सहा
रहकर मनका जागना नहीं चाहते हैं इसे प्यारी उपनि

विवेक--हे सुमति इसमायाके शुभ चरित्र अवर्णनीय हैं कारण कि जितना मूल है सो सब इसी का है ऐसी अद्भुत गुणकीखानि है तिस मायाने अपने विचार से जब देखा कि यह आदिपुरुष प्रशंसनीय सबविधसे सबसे बड़ा पवित्र सामर्थ्यवान् अत्यन्तशूरहै सो जो कदाचित् मेरेऊपर अनुग्रहकरे और इनसेपुत्रहोवे तोउसको त्रैलोकका राजाकरें ऐसा मनोरथ मायानेकरके उसपुरुषसे रतिकी यह ऐसी अकथवार्त्ता है कि मायाकी कामना पूर्णहुई और उसीके अंशसे जीवनामिकपुत्र मायाके गर्भसे सुन्दर उत्पन्नहुआ उसके निमित्त अनेकनप्रकार के मन्दिर पंचतत्त्व करके नवनवद्वार रखकर सुशोभित किये और जितने लक्षण मायामेंथे सो मायानेउसको सब सिखलादिये तब जीवने बड़ीलालसासे सुख दुःख सहित त्रैलोकका राज्य किया—

सुमति—हे महाराज जो आपने कहा सो सत्य है माताके जो शुभ और अशुभ गुणहोतेहैं सो पुत्रमें दिखायपड़ते हैं-

विवेक—हे दूरदर्शी सुमति उसरूपकीराशि पुरुष और मायासे इसजगत्का प्रकाशहै और उसीजीवसे मनहुआ तिस की पहिली रानी प्रवृत्तिनामी है उसके वंशका वर्णन सुनो जैसेसूर्यकाप्रकाश दर्पणमें और दर्पणकाप्रकाश जैसे जल और जलके प्रकाश से मन्दिरमें उजालाहोताहै वैसेही परमात्मासेआत्मा आत्मासेमन और मनसे सांसारिकविलासहै परंतु इसकासाक्षी परमात्माअखंडित सबके बीचमें और सदैव सबसे अलग आनंदकी राशि है सो आत्मा ऐसे परमात्मा को भूलकर मनसे बँधे

छिनभी अलग नहींकरता और उन्हीं के रस में मग्न होकर मनने अपनेपिता आत्माको बिसराय दिया अब उन्हींके साथ प्रीतिकेवशीभूतहो जड़तारूपी सेजपर अपनारूप भूलकर दीर्घनिद्रा में पड़ाहै और जैसे जो सोताहै सोस्वप्नमें जैसेकुछपावे अथवाकिसीसेलड़े फेर जगनेपर उसका विश्वासनहीं करता उसीप्रकार मन अहंकारके संगसोते में कराल स्वप्नदेखरहा है और यह स्वप्न ऐसा है कि जिसमें सती और यती और मुनि और राजा और रंक सब चौदालोकों में फिरतेहैं और सपनेहीमें यह कहिते फिरतेहैं कि यह मेरे पिता और माता और भाई स्त्री पुत्र धाम और ग्रामहै और उसी स्वपनेमें संसारसमुद्र में बहिता फिरताहै उसी में पैरता थकता बूड़ता उछरता है परंतु जबतक जगतानहीं तबतक आपुही जानतानहीं है और देखो आपही तो देखता है और आपही उसमें मग्न है॥

-आप बिसार्‍यो आपको आपुहि पर्‍योकवात।
आपुहि तो दूलहबन्यौ आपुहि बन्यौबरात १॥

-हे महाराज आपका पितामन अहंकार और प्रमके वशीभूतहोने से बावला होगयाहै सो यह भेद मैंने आज जाना कि मनने इस निद्रामें सुखमाना है इसी कारण इस असत् संसारमें हठकरके प्रतीत करताहै तिस्से अब हेमहाराज ऐसायत्न करना उचितहै जिससे यहमनजग कर स्वप्नको स्वप्नजानकर अपना निज चेतन रूप पहिचान लेवे (जब रानीने ऐसे वचन कहे तब विवेकराज सशोचहो मस्तकको नीचेकर इसका कुछ उत्तर नहीं देतेहुये)

-हेप्रभु आपहीने तो मुझसे यहसब आत्माका भेदकहा

नेत्र चुरायकर लज्जावश होरहेहो इसका क्या कारण है
सो कहिये--

--हे सुमति तुम शुभशिक्षकहो इसे सुनो इसमें जिसकी
मुझे चोरीहै उसका नाम लेतेहुये मुझे लज्जाआती है
कारण कि मुझको तुम्हारी बड़ी आनहै और स्त्रियोंका
यह स्वभाव है कि दूसरी स्त्रीका नामसुनने से दुःखित
होती है--

--हेमहाराज संसारमें स्त्री दो प्रकारकी होतीहैं एकसात्व-
की जो उत्तमहै दूसरी तामसी जो अधमहै उसकाल-
क्षण यहहै कि जिसप्रकारसे प्रीतम सुखमानै वैसाही
जो यत्नकरै सो तो उत्तमहै और जो पतिसे प्रतिकूलर-
हिकर सुखचाहै वह अधमहै और देखिये जिनसे प्रीतम
प्यारे सुखपावैं उन्हींसे वहसुखमानै और जिसे पतिका
हेतुहो उसीसे अपनाहित समझै अर्थात् प्रीतमही की
चाहिसे चाहिरक्खे बिनाप्रीतमकी चाहिके किसीसेचाहि
नहीं रक्खे और जिनके प्रीतमहीकी उत्तमगतीहै संसार
में वही स्त्री उत्तमहै और मेरी मतिमें जो स्त्री पतिसेप्र-
तिकूल चलती हैं वहीं पापकीमूल नरककीभागीहैं और
हेपति वही पुरुषउत्तम है जो स्त्रीकेवश नहीं है इस्से हे
प्यारे आपको मेरे वशहोना उचित नहीं है और मैंतो
आपके आज्ञाही मेंहों इससे तू जिसप्रकारसे आपके
राज्यकार्य होवे सो आप बेखटके कहिये--

--(बड़ा सुखमानकर कहतेहैं) हे धर्मज्ञ रानी जो यह
बात तुमको उत्तमलगी तो अब मैं तुमसे भेद न रखकर
सब भेद यथार्थ कहताहूँ अर्थात् उपनिषद्नामिक मेरे
एक और स्त्री है सो बहुतकालहुये जबसे मोहवश मुझ
से मानकिये है और अब मुझसे अलग रहकर किसी

कदाच श्रद्धा मेरीओरसे उसकेपास जावे और मृदु
चनों से मेरा अभिलाष उसको जनावे और विनती
मान छुड़ाय उसको मुझसे मिलादे फिर उसके आने
हे प्रिया तुमको मान न होवे और उसके और मेरे रहस
में किसीप्रकारका विघ्न न पड़े इसीकारण जाग्रत् स्व
सुषुप्ति जो तीनअवस्था तुम्हारेस्थानमें हैं इनमें तुम्हा
राज रहकर चतुर्थ तुरीय अवस्था में उपनिषद्को ले
कुछ दिन जो मैं रहूँ तो कर्त्ताकी कृपासे यह आशा
कि अवश्य प्रबोधचन्द्रोदयनामिक पुत्र महान् धीरज्ञान
गुणवान् आनन्दकीराशि शूरवीर सुजान चन्द्रसदृ
होगा वही मनकी नींदको मोहरूपी रात्रीसे जगायक
मिटा देगा ॥

सुमति–हे नाथ जो इसप्रकारसे शील समुद्र पुत्र उत्पन्नहोवे त
मनआपकेवशहोजायगा और मैंभीबड़भागिनी होवँग
और हे प्राणप्यारे आपको पिताका उपकार करना उ
चितहै और मैं तो आपकी आज्ञामेंहूँ इससे शीघ्रही श्र
द्धाको उपनिषद्के समीप भेजिये सो मनायल्यावे औ
आप उनसे हठकर प्रीति कीजिये ऐसी नीतिभी है औ
शुभकार्यको विलम्ब न करना चाहिये क्योंकि भीज
पर कमल भारीही होताहै ॥

विवेक–(ऐसे वचन सुनकर अत्यन्त हर्ष से कहते हैं) हेसुमा
अब जो तुम मेरी सहायक हुईहो तो सम्पूर्ण कार्य वि
नाही प्रयाससे सिद्धि होजावेंगे और हे प्रिये अब ज
यह मन परमात्माका पुत्र निद्रावशहो स्वप्न देखता
इसको ऐसी निद्रा उचित नहीं है यह फल अहंकारका
दूसरे मोहभी बहकाता रहताहै तीसरे कामादिक सहा
रहकर मनका जागना नहीं चाहते हैं इसे प्यारी उपनि

उत्पन्न होतेही मेरे मन्त्री सबल होजावैंगे तब काम क्रोधादिक दुष्टगण जो मनको बहकातेहैं सो मैं निश्चय करके कहताहूं कि प्रथम इनहींको मारूँगा फिर मोहका नाश करूँगा तबतक प्रबोध पुत्र उत्पन्न होकर मनको जगायेगा जब मन इस निद्रासे जागकर स्वप्न वासना को त्याग करेगा तब अपना निजरूप पहिंचानकर आपा आपको पहिंचानकर अपने पिताको जानेगा और जबसे यह जीव मायासे जन्माहै तबसे अपने पिता के भेदको नहीं जानताहै और यह माया नश्वर खेल खिलाती है तिससे पिताका स्मरण नहीं आता और जगत् पिता जो भगवान् है उनने भी जीवको खेलते जानकर चाह छोड़दी इसी हेतु पितासे बीच पड़गया अब परमात्माकी परमप्यारी जगतहितकारी परमकृपाल जो विष्णुभक्ति है उसीसे जब इनकी सुध देकर उसी के साथ आत्मा को करै जब भक्ति परमात्मा से मिलावै तब अपनी निजमर्यादाको पायेगा जब इसरीति भक्ति इनकोदिखावैगी तब पुत्रकोलेकर पिता कंठसेलगायेगा और पिताकी गोदमें पुत्रबैठेगा तबपरमानंदहोयगा और पिता पुत्रके मिलनेसे दशों दिशोंमें आनंद बधाई होंगी और पिता पुत्रके मिलनेसे नित्यानंदहोयगा और परमात्मा आत्माको कंठसे लिपटायकर पुत्रका सुखमानेगा इसरीति हमने पिताकाहित मोहको सपरिवार नाशकरके निर्माण कियाहै और मैंनेभी ऐसा प्रणकिया है कि जबमन निजस्थानपावै तबनश्वर देहको त्यागकर ब्रह्म में समाय जावै--

१--हे नाथ आपने जो यहमंत्र कियाहै सो मैंनेभी निश्चय करलिया है कि जब आप शरीर त्यागकरैंगे तब मैं निगोड़ी क्या करोंगी इसहेतु विशेष शरीर

देवँगी कारण कि आप के विरहसे वियोगाग्नि उत्पन्न होगी इसे यहचरणानुरागी दासी तुरंतही जलैगी--

विवेक--हे सुमति तुमको धन्यहै मुझको तुम्हारा भरोसाहै इससे अब चलकर समाधिकों को तीर्थोंकी ओर बिदाकरैं (इस प्रकार कहिकर विवेक महाराजगये और तंत्रीगण गान करनेलगे)

इति प्रथमो ऽंक

"भुवदेवदुबे"
गढ़ा कोटासागर

मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १८९३ ई० ॥

१ जुज ४ वर्क़

श्रीगणेशायनमः ॥

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक दूसराभाग ॥

द्वितीयांकः

पात्र नट दंभ दंभशिष्य अज्ञान क्रोध लोभ
अहंकार मोह चारवाक तृष्णा हिंसा परमावती मिथ्या

नट०—(कीर्तिब्रह्म महाराज से) हे महाराज पूर्वांक में जो बिवेकने बिचार किया उसको सुनकर मोहने भी अपने मंत्रियों को यह आज्ञादीहै कि ऐसा यत्न करो जिसमें विवेक का मंत्र सिद्ध नहोवे (इसअंतर में परदा के ओट से दंभ का स्वांग यह कहताहुआ वाहिरआया—

दम्भ०—महाराज मोहनें मुझ से यह कहाहै कि बिबेक राज उपनिषदनामिक दूसरीरानी से प्रबोधनामिक पुत्र उत्पन्न कर कुल सहित मेरानाश कराया चाहताहै और अपनी फौज भी सबतीर्थों की ओर भेजदी है यह सबिधि समाचार मुझसे दुर्बासनाने कहेहैं इसहेतु जो जो योद्धा मेरी जोट के होंय सो आलस्य निद्राको छोड़ बखतर पहिन अपनी २ कमरकसें और शिकस्त कराय बाढ़खिचाय शस्त्रोंकोलेकरएेसेचैतन्यरहैंकिजिसमें शत्रु का बलनहीं बढ़ने पावे और प्रथम जायकर सबतीर्थों में अपना डेराडालो और मुझ दंभ नामिक सेवकको यह आज्ञाहुई है कि तुम काशीजी में जाव जो मुक्ति की पुरीहै जहां साक्षात् शिवजी सहित अनेकन सिद्ध साधक रहते हैं उनके जपतपमें बिघ्न डालकर उनको वेदसे बिमुख करदेव कारण कि यह स्थान मेरामुख्य है और इसरीतिके बर्तने से तुम्हारा अधिकार अधिक होगा इसहेतु महाराजकी आज्ञानुसार मैंतो काशीजी

में रहूंगा और सबलोग जो राजाका लो
चैतन्य होजावें इतना सुनतेही नटने उसी
स्थान काशी नामिक रचा जिसमें किसी
माथेपर तिलक दिये कमलपत्री वस्त्र उ
जनेऊ पहिने गीता हाथमें लिये प्रमा
पंडित बोलरहे हैं और बहुतक पुरुष श्रवण
किसी जगह तिलक छापदिये हुये बैरागि
पहिने सुमरनी हस्तमें लिये आनंद में नि
आप हरिकीर्तन करते और औरोंको उपदे
कोई स्थानपर जटोंकाजूटाबांधेहुये भस्मचढ़
लगाये तपी तेजस्वी मुनी बनेहुये बैठे हैं
मौन होकर माला जपरहाहै कोई पंचाग्नि
कोई भुजा उठाये है कोई सूर्यकी ओर देख
रीति बिबेकियों के अनेक स्वरूप बनाये उ
में एकस्थान ऊंचा और उत्तमबनाया उसप
सन रक्खा उसपर आयकर दंभने स्थान किय
कि खबीधोती पहिने नामांकित उपवस्त्रलिये
लगाये तिलक बनाये सुंदर यज्ञोपवीत प
और पुस्तकें रखीहुई उज्जवल गादी तकिया
भक्तका भेष बनायेहुये बैठा है परंतु मानोइस
अंदर बटपार छिपा हुआहै इसकी शोभा ऐ
जैसे शहद में लपेटीहुई कतरनी रखीहो जो
शिष्य कपट में अत्यंत चतुर चेटक नाटक ए
कि जिससे कामना तुरंत सिद्धहोजावै और
वाल्मीक व्यासजी ऋषीने अपनी पांडित्यता
तथा सर्वज्ञता सिद्धाई सहित शिष्यनके द्वार
की है उसी प्रमाण दंभके शिष्यभी कररहे
स्त्री पुरुष दर्शनोंको आतेहैं सो छूरहीसे दंड

करते हैं परंतु दंभका यह हालहै कि बाहि
है पर अभ्यंतर जिसका मलीन है मन
विषय के आधीन है और स्वरूप जिसका
तव्य वायस सदृशहै मयूर अमृत से बचन
पर सर्पको भोजन करने में रुचि मानती
दंभके हृदय में विषय वासना छायरही
जन कमल पत्र समान संसार से बिरक्त
रीति दंभ ऊपरसे भक्तिमें रुचि रखता है प
अभ्यन्तरसे जिसको रेखभी नहींहै इसप्रक
दंभ गंगाजीकी तरंगोंको देखरहा है ॥

उसी समय वृद्ध ब्राह्मणका भेष किये
लिये अहंकार का स्वांग परदे के अन्दर से
इसस्वरूप से कि जिसकी भौंहैं चढ़ीहुईं
भरेहुये जो किसी ओर देखतेहैं तो ऐसा
कि मानो इसको मारताहै गालियांसे देत
प्रेमका बोलनाहै बड़ीउत्तालतासे श्रीकाशी
और गंगाजीमें अधीर्यता से बस्त्र रहित
कूदकर रहस्यकरके बूड़ता उखरता हुआ
गंगाजी से कहने लगा कि हम समुद्र त
तू बिचारी कितनीहै ॥

नजीक के बैठने वालों से कहताहै कि,
नुष्य किसी प्रमाणका नहींहै और अपने
अनीति की अग्निमें जलताहै परंतु मेरे
जानपड़ताहै कि यह उसी राधानगरीसे आ
बहुत से क्रोधी छली छिनार और झूठे
नगरीमें मेराभी प्रपिता रहताहै सो इससे
खबर अपनको अवश्य मिलेगी ॥

इतने में अहंकार आगेको चला और

कथाके प्रेममें पगाहुआ देखकर कहनेलगा कि देखो यह अपना भेद नहीं जानते कहो तो वेदके पढने से इनकी दृष्टि मे क्या आता होगा मेरेजानमें तो जैसे मेंढक चिल्ला २ कर अपना जन्म वृथा खोताहै परंतु मेघोंको प्रसन्न नहींकरसक्ता यही रीति इनकीहै देखो जो सुख और भोग प्रत्यक्ष है उनसे देह और मनको खींचकर दूर रहते हैं और जो कहानी सुनी है मूर्ख उसमें निश्चय ल्याकर नेत्रोंको मूंदकर मुक्तिका मार्ग देखतेहैं--फिर आगे चलकर उज्जल भेष निर्मल यानी हंस सदृश वैरागियोंका समूहदेखा कि कोई तो हरीका गुण वर्णन कररहाहै कोई श्रवण करके हृदयमें रखरहाहै कोई बैठकर कीर्तन करताहै कोई प्रेमानंद समुद्रमें मग्न होरहाहै कोई श्रीकृष्णको रटरहाहै कोई अर्चन बंदन कररहा है कोई प्रभूके चरण कमलों का ध्यान धरके अनेक प्रकारकी सेवा कररहाहै कोई दास भाव रखकर प्रभूकीइच्छाहीको सर्वोपरि जानताहै कोई सखा भाव मानकर अंतःकरण हरिसे लगारहाहै कोईमनसा वाचा कर्मणा करके श्रीराधाकृष्णपर निछावर होरहाहै इस प्रकार वैरागियों की भक्ति देखकर अहंकार को आगसी लगगई और कहनेलगा कि ये मूर्ख विचार हीन हैं इसीसे यह ऐसे व्याकुल और भ्रमित रहते हैं कारण कि जो देह प्रत्यक्ष में नित्य है उसको अनित्य नाश मान् जानतेहैं और जो नेत्रों से नहीं दीखता है उसको नीत सहित लक्षकरना कहिते हैं मेरे जान तो यह वृथा आकाशको नापतेहैं और इनपुरुषोंकी जानमें वेदके वाक्यों से भ्रमदूरहोताहै परन्तु मेरेमतमें उन्होंने इनपर भ्रमका जारडालाहै (इतना कहि आगे कूदकर

लगाकि) देखो यह चोर सदृश बिनाकिये दंड :
रहे हैं कुछ अन्न वस्त्र नहीं पाते इसीसे तप कररहेहैं =
स्त्री आदि जो भोगहैं सो मानों इनके नसीब में वृथ
तिससे यह मूर्ख इसी योग्यहै मानो साक्षात देह धा
किये रोग यहीहैं इनको देखनेसे संतापहोताहै का
कि यह आपो आपजलरहेहैं (इसरीत हरिभक्तों की निं
करता हुआ आगे जाय दंभका स्थान देख हर्ष
प्राप्तहुआ क्या देखताहैकि) कितनेही दंभी वहां उज्ज
ल भेष वनाकर बैठे हैं कोई अग्नि कुंड स्थापित
यज्ञकररहा है कोई समाधि लगारहाहै कोई श्रवणों
सुरतको खींच नेत्रोंको छिपाय ध्यानकर रहा है क
मालाको लिये स्त्रियों में चित्तलगा रहा है और ब
से लोग वहां आते हैं सो मानों मूर्तिधारी भोग
और किसी जगह होम होरहा है जिसकी सुगंधि फै
रहीहै और धुलाहुआअत्यन्तही उज्ज्वलस्थान है उ
सब कोई सिद्धाइको वर्णन कररहा है अर्थात् जो कु
कहि देतेहैं वही होताहै और जिसपर स्वामी कृपाक
तेहैं उसके अन्न धन सब बढ़ताहै और जहां से कितने
ही वामोंने पुत्रपालियेहैं और सबके हृदयकी बातज
लेतेहैं (यह देखकर अहंकार वहांपर खड़ा होय कहि
लगा कि जान पड़ताहै कि यहस्थान किसी महापु
षकाहै और इन्होंने सब तत्त्वोंका भेद अच्छी रीतसे ज
नाहै जोअपने शरीरका पोषण करतेहैं यहांपर कुछ दि
विश्राम करकेफिर और दिशाको देखनाचाहियेइतन
कहिअहंकार अंदरजायदंभको आशीर्वाद देनेलगा
:--(दंभशिष्य उस ब्राह्मणको पासआतहुये देख चि
कर कहिने लगे) अरे महंत जीके समीप मतजा दूर
से आशीर्वाद कहु ।

अहंकार--दंभको देख अन खाय कर कहा कि यह कौनसादेशहै और यहां बड़े कठोर चित्तके मनुष्य रहितेहैं जो किसी विदेशीका मन भी नहीं लेतेहैं ..

दंभ--तब दंभने अहंकार का समाधान हांससे करके कहा कि इसकादोष दाससे नहींहुआ (फिर शिष्योंसे कहा कि)यहकिसी दूरके देशसेआयाहै जिससे इसने हमारे धर्म का भेदनहीं जाना है अब इससे पूंछो कि तेरी कुलरीति क्या है ब्राह्मण तूही हुआहै कि तेरेबापदादा भी हुये हैं औ इसके हाथ पांव उत्तम जलसे धुलाकर समीपलावतो पूंछें कि तुमको कौनसी पीरहै ॥

अहंकार--तुमको विदित नहीं है कि मेरा कुल सबके कुलों के ऊपरहै और जो पृथ्वीपर बड़ा स्थान राधानगरहै वहां से आताहूं इतना कहि पगोंपर मार्गकी धूल लिपटाये हुये दंभकी आकन्नजरा भी न मानकर बराबरीसे आ-सनपर बैठनेको चला ॥

दंभ--(महान्क्रोधसे) क्योंरेमूर्ख समुझता नहीं है जो बिना पगधोये मेरेसमीप आताहै अरे अचेत कदाचतेरे वस्त्र का छींटा मेरे वस्त्रपर पड़जावेगा तो फिर मुझे वस्त्रोंस-हित स्नान करना पड़ेगा ॥

अहंकार--(हँसकर) मैं बहुत देशमें भ्रमताहुआ फिरा परंतु ऐसा अभी मैंने न कानों सुना न आंखों देखा ॥

दंभशिष्य--अरे ब्राह्मण तूनहीं जानता कि यहांपर बहुतसे राजा पड़े रहित हैं पर महंतजी के चरण छूने नहींपाते और तुमसरीसे छूछोंको भला कभी किसी महंतने भी पूंछा है तथापि तुमारे ऊपर महंत ने बड़ी कृपाकी जो तुमसे प्रेम सहित बोले अब तू बकवाद मतकर और इरहां से आशीर्बाददे (इतना सुन अहंकारने मन में अनुमान किया कि ऐसा जान पड़ताहै कि यह दंभ है



और इसने यहाँ बसकर अच्छा किया इतना कहि जब दंभके समीप फिर बैठने लगा तब दंभशिष्य डांट कर बोले) ॥

दंभशिष्य-- अरे ब्राह्मण हमने कईबार तुमको मनाकिया और तू हमारी बात नहीं सुनता इस आसनपर बैठकर महंत जी जप करते हैं इस हेतु इसके सबपैर पड़ते हैं ॥

अहंकार--(बड़ेही अलगर्जतासे) अरे मूर्खहो तुम्हारा महंतहम से बड़ा नहींहै और अभी तुमको हमारी बातज्ञातनहीं है सो वर्णन करताहूं तुम श्रवणकरो देखो मेरी माता नीच कुलमें उत्पन्न हुई है परंतु मैंने ऐसे ऊंचे कुल में बिवाह किया है जैसे मानों हिमाचल है इसकारण मेरी पदवी बापसे भी चढ़बढ़ गई है और जितने ऊँच नीच इस संसार में हैं उनसबों पर मेरा अधिकार है और जितनी मुझको लज्जाहै सो कहिताहूं तुम सुनो कि मेरा एक नर्तनीका साढूथा उसका कोई एक मित्रथा उस मित्रकेमित्रके मामाके कोई कन्याथी उसको किसी ने झूठा कलंक लगाया ऐसा मैंने सुना सोई मुझको इतनी लज्जाहुई कि मैंने मारे ग्लानि के राजकाज धनधाम सब छोड़दिया और ऐसा उठआया ॥

दंभ--एक दिन ब्रह्माजीकी सभाके मध्य में गयाथा सोतुरंतही ब्रह्म देव मुझको देखतही खड़ेहोगये और सभा में जित ने देवता और सिद्धगणथे सो उनसबों ने दौड़कर मेरे पैर पकड़लिये और मेरे बैठने को सुवर्ण की चौकी रखकर बहुतसी बिनती की तब मैंने कहा कि इसको प्रथमतौ अग्नि से शुद्ध करो फिर गंगाजल से धोव तब यहस्पर्श के योग्य होवैगी तब ब्रह्माजी ने वैसाही करके विनय सहित मुझको बैठाला यह देख संपूर्ण देव चकित होकर रहिगये--

अहंकार--(मन में कहाकि दंभतो अच्छा झूठाहै देखो कहा तो मनुष्य तनधारी है और कहां ब्रह्माजी का स्थान है) फिर कहाकि तूएक ब्रह्मा के आदर से हृदय में नहीं समाताहै यहां तो कोटान कोट ब्रह्मा मेरे पैरों पर पड़े रहितेहैं और सदैवकाल मेरी भृकुटियों को देखते हुये भयभीत रहतेहैं परंतु मैं स्वपनांतर मेंभी उनकी ओर अवलोकन नहीं करताहूं--(तब दंभ ने अपनी बुद्धि से जाना कि यहपुरुष परम उदार मेराप्रपिता अहंकारहै इतना शोच उठकर अहंकार के पैरोंपर गिरपड़ा तब अहं कारने दंभको मुखपोंछ अंकमेंले हृदयसे लगाया और कुशलपूंछ कहनेलगा कि बहुतसमय व्यतीत हुआ जब हे पुत्र मैंने तुमको द्वापर में पाया था तब तुम बालक थे अब तरुणहोगयेहो और मैं वृद्धहोगया इसहेतु मैंने नहीं पहिचाना अब हे पुत्र कहो तुम्हारा पुत्र अनर्थ नामिक कुशल पूर्वक किस ग्राममेंहै और तुम्हारा पिता लोभ तृष्णासहित सुखपूर्वक कहांहै--दंभ-आपके प्रताप से सबमेरेही समीप सुख पूर्वक रहते हैं ॥

हंकार--हे पुत्रकहो तो इसनगरी में जो बहुतसे पुरुषदृष्टि आते हैं सो किस रीति हमसे अच्छहोवेंगे ॥

दंभ--आप तो सब जानतेहीहो जोसलाह बिवेक राजानेकी है कि इसनगरी में बासकरके प्रबोधचंद्रोदय का उदय करैं उसके उदय होतेही जो कुछ कुलकी गतीकी बि-परीत होयगी सो आप जानतेही हैं और जो आपने इनकईपुरुषों को आतेदेखाहै सो इनको महाबली बि-बेकने भेजाहै मेरी इच्छाहै कि इनमेंमिलकर ऐसा यत्न करें जिसमें प्रबोधचंद्रोदयका उदय नहोवे ॥

-हे पितामह अवश्य यह बातनहीं मिटती है और आप नेभी अच्छी बातकी जो इसनगरी में आये और मोह महाराजनेभी इसनगरीको अपनी राजधानी नियतकी है सो आजकलमें यहां आनेही चाहतेहैं--(अहंकार और दंभकी इतनी बातचीत होतेही मोहका स्वांग परदे के अंदरसे प्रगटहुआ आगे उसकेएकचोवदार आयपुकार कर कहिनेलगा कि सब स्त्री पुरुषहो सावधान होकर सुनो अब महाराजधिराज मोहराज का आगमन होताहै इसहेतु तुमसब शृंगारकर गलियोंकी धूलदूरकर सुगंध सींच गृह २ के दरवाजों को संवारो उसी समय मोहराज सुंदर वस्त्र पहिने रत्नजटित मुकुटदिये छत्र घूमताहुआ बड़ेराजसी ठटबाटसे जहां दंभादिकथे उसी स्थानपर एक ऊंचे सिंहासनपर आयकर बैठगये और दंभादिकनने दंडवत्की और सभा जमगई चोबदार बो-लनेलगेचमरछत्र होनेलगा तब मोहराजने शोच किया कि संसारको बिवेकरहित करदेना है फिर दंभकी ओर देखकर कहा कि कहो इसपुरी के समाचार कैसे हैं॥

-(खड़ाहोय हाथ जोड़कर) हे महाराज आपका प्रतापबड़ाभारी है जबसे इसदासका बास यहांपर हुवाहै तबसे आपही की आन फिरती है और सब आपहीकी आज्ञानुसार बरतते हैं कोई बिबेककी ओर चित्तनहीं देताहै परंतु कुछ एक पुरुष बिबेकको नहीं छोड़तेहैं सो दीनसे पड़े रहिते हैं (इस प्रकार दंभके बचन सुन मोहने सुख माना फिर शिर नीचेकोकर शोच करने लगा के शत्रुके मनुष्योंको निकालही देनाचाहिये अ-थवा अपने बसीभूत करके इकछत्र राज करना योग्य हैं ऐसा हँसकर दंभसे कहि फिर बिबेकियों को उपदेश करनेलगे।

गोह ये मूर्ख द्वगोंके अछत अंध सदृश दिखते हैं यह देहके जीवनको नहीं मानते हैं और जीव और देहकोविलग मानते हैं जो वस्तु कुछ भी नहीं है उसको निश्चय कहितेहैं और जो प्रत्यक्ष दृष्टिसे दिखताहै उसकोमिथ्या मानते हैं और कहिते हैं कि यह देह पंचतत्त्वों करके रचित है परंतु प्रकाशमान जो आत्माहै सो इससेजुदी है इसका मैंने उत्तम प्रकारसे निरणय करलिया है कि पंचतत्त्वही से संपूर्ण संसार है इसकारण पंचतत्त्वों से कोई दूसरा और नहीं है और अनेक प्रकारसे होकर सुख पाते हैं-और यह देह देहहीसे प्रगट होतीहै जैसे मनुष्य पशुपक्षी वृक्षादि इनसे यही उत्पन्न होते हैं परंतु इनसे आत्मा दूसरी नहीं है देह और आत्मा एकही है और इस रीतिसे भी कहिते हैं कि यह देहजड़है परंतु आत्मा से चैतन्य है सो यह भाषण जिस प्रकारसे मिथ्या है उसका कारण कहिताहूं सो तुमसुनो जैसे पान सुपारी कत्था चूना आदि सबपदार्थ अलग२ हैं परंतु इनसबके एकत्र होने से लालरंग होजाताहै इसी प्रकार जब ये तत्त्वएकत्र होते हैं तब चैतन्य दिखने लगता है परंतु वास्तविकमें चैतन्य पदार्थ कोई नहींहै और जोआत्मा को अलग कहितेहैं सो सब मिथ्याहै और जोसब लोग कहने लगते हैं कि पृथक् २ धर्मसहित वेदों में चारों वर्णोंका प्रमाणहै सो यहभी झूठहै कारण कि जितने मनुष्य हैं वे सब हाथ पैर नाक कान आदि अंगों से एकहीसे हैं फिर कौनसे चिह्नों से इनको जुदेजुदे कहैं और परस्त्री तथा परद्रव्यके स्पर्शका बड़ा दोषकहिकर वेद डरवाते हैं सो यहभी मिथ्याहै कहो अपने से पराये में क्या भेद है और कहो हिंसामें क्या दोष है मांस भक्षण न करने में क्या पुण्यहै और मांस से मांसकी

वृद्धि होती है इससे इसमें कुछ दोषनहींहै और वेद व पुराणों ने बहुतसे विवेकियोंको ठगकर बावरे करदिये हैं कारण कि वेदोंके वचनोंको प्रमाणिक जान चंद्रवत् स्त्रियादि भोगसे उदासीन रहिते हैं और भुक्ति मुक्ति कहिते हैं पर उसका भेद कुछनहीं जानते मेरेजान मरणही इससंसारमें मुक्तिहै और मरनेही से सबकी गती होती है क्योंकि फिर उसका कोई चिह्न दृष्टि नहीं आता और जो आत्मा कहिते हैं सो दूसरीनहीं है यही पंचतत्त्वहै जो प्रत्यक्ष दृष्टि गोचरहै इन्हीं से जीवनका लाभहै और इन्हींसे खाने पीने रागरंग स्त्री आदिकों का सुखहै और सिद्धांत यह है कि जिसरीति से बने इस शरीरको पुष्टकरै--(इतने में एक चारवाकका स्वांग बनकर आया और एक शिष्य भी उसके साथहै उससे चारवाक कहिताहै कि हे पुत्र वेदका प्रमाण कभी नहीं मानना चाहिये इसमें कुछभी सारनहीं है--क्योंकि ये कहते हैं कि मखकार वैकुंठको जाता है इसको हृदयमें शोचो कि कैसी मिथ्याबात है कि जो पदार्थ अग्नि में जलजाताहै उससे फल चाहितेहैं यह बड़ीही मूर्खताहै और जो श्राद्ध करते हैं इसको देखकर मुझे बड़ी हँसी आती है कि यह क्या करते हैं॥

हे नाथ जो वेद मिथ्याहै तो बड़े आश्चर्यकी बात है कि मुनीश्वर संपूर्ण सुख भोग स्त्री आदिक षट्रस खान पान भूषण बस्त्रसुगंधि रागरंग छोड़कर एकाकी बनमेंरहिते हैं और बल्कलांबर बिभूति धारणकरके कंद मूल फल अहारकर निर्दोष श्री रामनामको रटतेरहिते हैं और जप तप हवन वेदके अनुसार ब्रह्मजानने के हेतु इसीको सार जानकर बड़े कष्टसहित करतेहैं इसका क्या कारणहै

चारवाक-(हँसकर) वेदका बनानेवाला बड़ाही कौतुकीहै जिस ने संपूर्ण संसारको भुलाय रखा है और ऐसा लालच बनाकर बतलाया है सो मैं तुमसे कहिताहूं सो सुनो जैसे कोई प्यासा मिष्ट जलके समीप बैठाहोय और उसको कोई भुलाकर यह कहि दे कि मैं तुमको उत्तम जल बतलाये देताहूं इस जलमें दुर्गंधि है यहकहि मृग तृष्णाका जल बतला देवै और वह उसको देखकर श्रमपाय हर्षमाने तोइस स्थानपर किंचित बिचारकरना उचितहै। देखो कहां तो सुंदर सैयापर नवीन स्त्रीसहित शयनकरना और कहां षटरस व्यंजन छोड़ कंद मूल फल अहारकर बनमें अकेला रहिना और कहांयह कोमल पाटांबर और कहांयह बल्कलांबर और जो कहितेहैं कि विषय बिरक्तासे स्वर्गहै सो उनकोनर्क समान दुख भोगकरते प्रत्यक्ष देखते हैं-(यह वार्ता सुन हृदय में हर्षपाकर मोहने कहाकि यह मनुष्य बड़ाचतुर सुजान देखपड़ता है तब चोबदारको उसके बुलानेकी आज्ञादी और चारवाकने आकर मोहराज कोजुहारकी॥

मोह-हे चारवाक मैं तुम्हारे बचन सुनकर अत्यंतही प्रसन्न हुवा इससे अब तुम सविस्तर बर्णन करौ कि कौनहो और कहांसे आयेहो क्या नामहै॥

रवाक-(हाथ जोड़कर) मेरा नाम चारवाकहै औरमैं इसडेवढ़ी का आदि सेवक शुभ चिंतकहूं परंतु इससमय कलियुग ने आपके चरणोंको प्रणामकहि कुछ संदेसा देकर आपके समीप भेजा है कि बहुत प्रकारसे बिनय सहित कहियो कि आपकी आज्ञामेरे शीशपरहै परंतु अब जो कुछेक कार्य शेष रहगयाहै उसको करके आपकी कृपा से ...

कितने कार्य बाकीरहे कलियुग ने बतलाये हैं।

चारवाक–(हाथ जोड़कर) हे महाराज जिसको वेदमार्ग कहिते हैं सो अब किसी प्रकार चलनेनहीं पाती है कारण कि अब सब मनुष्योंने परस्पर प्रीतिछोड़ छलसहित बर्तना प्रारंभ करदिया है और चेला गुरू पिता भ्राता पुत्रादि सब निज स्वारथी होगये हैं और अपनेही पोषण में रुचि रखतेहैं और अधर्म में प्रीति रखकर धर्म कोई नहीं मानताहै और चारोंवर्ण अपनेकर्मोंको छोड़कर अकर्म करते हैं अर्थात् सेवा और खेती तथा वाणिज्य ब्राह्मण करते हैं और शूद्र वेदको उच्चारण करते हैं और कुरुक्षेत्रादि तीर्थों में जो बड़े विवेकी थे सो सब निकाल दिये हैं अब वहां आपका ढंढोरा फिर रहाहै और शम दम नेम यमादिक तो आपही से भागगये हैं अब ये इस सेवककी घातसे किसी कामके नहीं रहे इससे अब हेराजन् शोचनहीं रहा और जहां यह आपका सेवक है वहां बोध उत्पन्न नहीं होनेपायगा॥

मोह–(इसरीति कलियुगकी करणी सुन सुख पूर्वक) अब मैंने अच्छी प्रकारसे जानलिया कि कलियुगका बड़ा पुरुषार्थहै और यह भी निश्चय हुवा कि जबतीर्थों में कलियुग ने हमारी आनमानी है तौ और भी कार्य सुगमता से शीघ्र सुधार लेवेगा॥

चारवाक-महाराज कलियुगने समय पायकर कुछ और विनय करने को मुझ से कहाहै॥

मोह–कहु कलियुगने और क्या कहाहै॥

चारवाक-हे स्वामी कलियुगने यहविनयकी है कि जितनेकार्य आपने जिस प्रकारसे बतलायेथे वे सब उसी रीति से होगये हैं परंतु अभी जिस स्थान पर चारों वर्णों में विष्णुभक्ति है वहां हमारा पराक्रम नहीं

चलता है कारण कि वे सदैवकाल ईश्वर में चित्त लगाय निश्चय प्रेमसे जैसे जक्तके कारण परब्रह्मने पृथ्वीके भारटारनेको अवतारधारणकिये हैं अर्थात् श्रीरामहोय रावणका बधकिया कृष्णहोय कंसकोमारा इसीप्रकार और जो चरित्र जिसभावसेकिये तहां उसी कारणसे ऐसानाम प्रभूकाहुआ जैसे दयासिन्धु गोबिन्द गिरिधर मुरारी यशोदासुवन नन्दआंगन बिहारी दशरथसुवन चापखण्डन शिलाशापमोचन निगम नीतमण्डन इत्यादिनामोंसे प्रतिमारच भावसहित अर्चन बन्दनकर नामकीर्तनकरतेहैं और नेत्रोंमें वही कोमल मूर्तिकाध्यानरखतेहैं और उन्हींमें अपनी चित्त कीवृत्तिको इसरीत लीनकरदेतेहैं जैसे मेघोंमें बिजली समायजाती है और प्रेममें मग्नहोय देहकीदशाको बिसराय चरनों नूपुरबांध नृत्यकरते हैं इसीरीतिको विषय भोगकोत्याग अहर्निशनिबाहतेहैं वहां मैं यद्यपि बहुतसी विघ्नेंकरताहूँ परन्तु वे बड़े शूरहैं जो किंचितही मुख नहीं मोड़ते हैं—(इसके सुनतेही मोहको शंकाहुई परन्तु धैर्य्य धारणकर निशंकबोले)॥

मो॰— हे मित्रहो यह विष्णुभक्ति की रीतसुनकर कोई मान मतकरो वह सदैव कालसे ऐसी शत्रुताहमसे मानती आईहै अब मेरी ओरके कुछ सेवक कलियुगकी सहायतापाकर उसकोयहां बांधल्यावैं अथवा वहींमारआवैं फिर असतनामा प्रतिहारसे कहा कि तुम क्रोध और लोभको खबरदेव कि वेदोनों विष्णुभक्ति के पासजाकर उसको यहां पकड़लावैं अथवा वहीं पर उसकानाश करदेवैं—(इतना मंत्रहोतेही एक पायकका स्वांग आया और उसने मोहराजको जुहारकरके पत्र रखदिया

मो॰— तुम कहांसे आये ॥

अज्ञान-हे महाराज पूर्वदिशामें समुद्रकेतीर उत्कलदेश अत्यन्त पवित्रहै जहांपर सम्पूर्ण आबाल श्रीपुरुषोत्तमकी पूजन करतेहैं जिनके प्रसादसे मनुष्य उत्तमहोजाते हैं वहांसे आपके मदनामिक योद्धाने इस पत्रकोभेजाहै और मैं सनातनसे आपके गृहका अज्ञान नामिक पायकहूँ-(तब मोहने पत्री अहंकारको देय पढ़नेकी आज्ञादी)॥

अहं०- महाराज इसमें यह लिखाहै कि यहांसे श्रद्धा अपनी कन्या शान्तिको लेकर चलीगई उसको विवेकराजने उपनिषद्के मनायलानेकोभेजाहै जिसे बोधकीउत्पत्ति हो इसको आपजानतेहीहैं सो रात्रि दिवस उसके समीप बैठ अस्तुतिकरके बिवेक के समीप लैजानेकोचाहतीहै और बिवेकराजका निष्काम नामिक सखाभी जो परमसुजानहै सहायतापरजाताहै ऐसाजानपड़ता है-(यह सन्देसा मान मदकासुनतेही राजाके हृदयमें बड़ाशोचहुआ फिर सम्पूर्ण सभाको शोचमें सभय देख कहिनेलगा)॥

मोह-हे सकल सैनापतीहो श्रवणकरो तुम सब श्रद्धासे कुछभी भय मत खाव कारण कि जहां तक सृष्टि है वह सब भय भीत मेरेवसीभूतहै वहां श्रद्धाको कहांसे मार्ग मिलैगी जो उपनिषद्को बिवेक से मिलायदेवैगी (फिर पायकसे कहा) अरे अज्ञान तुम मेरी बात श्रवणकर के वेगही जाय मदमान से प्रथम तो मेरी कुशलात कहो फिर कहो कि धर्म निष्कामको बिवेक की सहाय सहित छल बल से पकड़कर यहां भेजदेवे और जो बिवेक की उपनिषद्के लेनेको श्रद्धागई है उनके भी पकड़नेको पीछे से सैन्या आतीहै(यह सुन अज्ञान गया फिर असतका संग पाय कहिने लगा कि लाभ और क्रोध भी सहाय सहित आतेहैं उसी अंतर

में पटके अभ्यन्तरसे लोभ क्रोध के स्वांग आय माथ, नवाय प्रथम क्रोधने अपना पराक्रम सुनाया) ॥

क्रोध--सुनते हैं कि महाराज भक्तिकी त्रास खाते हैं और श्रद्धा अरु शांति से भी भय मानतेहैं सो हे महाराज जिनके मुझ सरी से शूरवीर हैं उनकी मरजाद दाबने को बिचारी श्रद्धा और शांतिकी क्या सामर्थहै और मैं जिसके हृदय में जायकर बैठताहूं वह कैसा भी समर्थ क्यों न हो परंतु उसी क्षण उसको अंधा बहिरा गूंगा करदेताहूं और जो कदापि कोई पंडित बेद पुराणका जानकार होय तो उसकी बुद्धि और बिद्या अरु चतुराई धुवांही उड़ते दिखलाई देताहै ॥

लोभ--हे महाराज मेरे बस संपूर्ण संसारहै और मृत्यु कोन डरकर सबमेरेही पीछेफिरतेहैंऔर रातदिन यहीबिचार करते रहितेहैं कि किस रीत से बहुतसी द्रव्य मिले और कहितेहैं कि ऐसी मिहनत करैं जिसमें गृह द्रव्य से भरलेवें और यह भी कहिने लगतेहैं कि अभी तो इतना जमाकिया है और आगे इतना जमा करूंगा फिर उसद्रव्यको लेकर दूर दिशाको जाय वहांसे माल भरकर दूसरी दिशाको लेजाकर दूना करूंगा श्रद्धा अरु शांति हीन पुरुष रात्रि दिवस यही बिचारते रहतेहैं कोई यह कहिताहै कि कमर बांध राजाकी सदैव काल उपस्थित रहिकर ऐसी सेवाकरै कि आज्ञा भंग का दोष कभीनहीं आनेपावे जोकदापि ऐसीभी आज्ञा होवे कि गऊको जोतो और ब्राह्मणका घरलूटलेव तो भी इस आज्ञाको मस्तकपर रखकर बिलंब नहीं करेंगे और जो कदाच कोई सन्मुख हाथभी जोड़ेगा तौभी लड़कर उसको मार निकालेंगे अथवा आप वहां मर जावेंगे इसप्रकार राजाको रिझावेंगे तोबहुतसी जागीरें

तेहैं कि विवेकके कारणसे मोहराज के हृदयमें बड़ा शोच उत्पन्नहुआ है तिससे हे सुमुखी मैं अपना हाल तुमसे कहिताहूं कि जो यह संपूर्ण सांसारिक संपत्ति चौदा भुवन और लोकलोकों में वर्णनकी है उनसबसे मेरा उदर इतना बड़ा है कि पूर्ण नहीं होता है और मेरा प्रतापरूपी मेघ ऐसा छायरहा है कि जिसे समादिक नक्षत्र व बोधचंद्र किंचितही दिखाई नहीं देते हैं ॥

तृष्णा--हेनाथ जो आपने अपनी कथाकही है सो सत्यहै और जिसप्रकार आपके प्रतापरूपी जाल में मत्स्य तुल्य संसार फँसरहाहै तौभी इस आपकीदासीका भी कोईअंत नहीं पाताहै मेरा उदर इतना भारी है कि जो कदाच कोई कोटिन ब्रह्मांड एकत्रकर उसमें डालदेवै तौ भी किंचित थाह नहीं मिलेगी जैसे कोई अग्निमें कितनाही क्यों न जलावै परंतु उसको संतोष नहीं है उसी रीत दिनप्रति में बढ़तीजातीहूं फिर वहां श्रद्धा और शांति कैसे आयसक्ती हैं-(उसी समय क्रोधने हिंसाको बुलाया सो पट अंतरसे बिकाल रूपसे आय मृत्यु समान भयानक स्वांगसे नृत्य करनेलगी फिर क्रोधने कहा)॥

क्रोध--हे प्रिया तू जानती है कि संसार मुझसे कैसा डरता है परंतु बहुत काल में मोहराज ने आज हमको बुलाया है सो जो तुमभी सहाय करो तो महाराजके सब कार्य सिद्ध होजावें इसहेतु लोक बेदके यश अपयश और संशय शोच संकोच बिचारादिको छोड़ कोई होय उसको बधकरो ॥

हिंसा--हे स्वामी आप मुझको अपनी आज्ञानुगामिनी जानें और माता पिता ब्राह्मण कोई भी होय आपकी आज्ञा

मे पटके अभ्यन्तरसे लोभ क्रोध के स्वांग आय माथ, नवाय प्रथम क्रोधने अपना पराक्रम सुनाया)।

ोध--सुनते हैं कि महाराज भक्तिकी त्रास खाते हैं और श्रद्धा अरु शांति से भी भय मानतेहैं सो हे महाराज जिनके मुझ सरी से शूरवीर हैं उनकी मरजाद दाबने को बिचारी श्रद्धा और शांतिकी क्या सामर्थहै और मैं जिसके हृदय में जायकर बैठताहूं वह कैसा भी समर्थ क्यों न हो परंतु उसी चण उसको अंधा बहिरा गूंगा करदेताहूं और जो कदापि कोई पंडित बेद पुराणका जानकार होय तो उसकी बुद्धि और बिद्या अरु चतु-राई धुवांही उड़ते दिखलाई देताहै ॥

ोभ--हे महाराज मेरे बस संपूर्ण संसारहै और मृत्यु कोन डरकर सबमेरेही पीछेफिरतेहैंऔर रातदिन यहीबिचार करते रहितेहैं कि किस रीत से बहुतसी द्रव्य मिले और कहितेहैं कि ऐसी मिहनत करें जिसमें गृह द्रव्य से भरलेवैं और यह भी कहिने लगतेहैं कि अभी तो इतना जमाकिया है और आगे इतना जमा करूंगा फिर उसद्रव्यको लेकर दूर दिशाको जाय वहांसे माल भरकर दूसरी दिशाको लेजाकर दूना करूंगा श्रद्धा अरु शांति हीन पुरुष रात्रि दिवस यही बिचारते रह-तेहैं कोई यह कहिताहै कि कमर बांध राजाकी सदैव काल उपस्थित रहिकर ऐसी सेवाकरे कि आज्ञा भंग का दोष कभीनहीं आनेपावे जोकदापि ऐसीभी आज्ञा होवे कि गऊको जोतो और ब्राह्मणका घरलूटलेव तो भी इस आज्ञाको मस्तकपर रखकर बिलंब नहीं करेंगे और जो कदाच कोई सन्मुख हाथभी जोड़ेगा तौभी लड़कर उसको मार निकालेंगे अथवा आप वहां मर जावेंगे इसप्रकार राजाको रिझावेंगे तोबहुतसी जागीरें

पावैंगे ऐसा जो सोचते रहिते हैं उनके हृदयमें श्रद्धा और शांति कहांसे आवैंगी कोईकहितेहैं कि धनवान के यहां खांद लगाय द्रव्य चुरालेनाचाहिये कोई कहिताहै कि बटोहीको मारकर लूटलेना चाहिये और भी जो अनेकन यतसोचतेहैं सो सबमुझीको लियेहुये सोचतेहैं नृत्य गान पढ़ने पढ़ाने चौदा विद्याके सीखनेमें मेराही आश्रय लियेहैं और जितने शरीर धारीहैं उन सबको मैंने अपने बसमें कर लिये हैं जब वे ऐसेही शोच में अपनी आयुष्यको व्यतीत करतेहैं तब श्रद्धा से स्वपने में भी भेंटनहीं होने पाती फिर शांतिको किसरीत पाय सक्के हैं॥

क्रोध--(सन्मुख खड़ाहोकर) हे राजन आप मेरे बल और पुरुषार्थको नीकी प्रकारसे जानते हैं इस हेतु मैं बहुत कुछ बर्णन नहीं करताहूं देखिये यद्यपि विश्वामित्र जी परमपवित्र क्षत्रीथे तिनने मेरेबस होकर बड़ाभारी दोष ब्राह्मण बधका न मान बिचारको छोड़ वशिष्ठ ऋषीके एकसौ पुत्रोंको मारडाला दूसरे इंद्रजो सुरपति हैं तिन्होंने भी मर्यादको छोड़ वृत्रासुरादि दोनों ब्राह्मणोंको अपने हाथसे बधकिये तीसरे सबके पूज्य पिता ब्रह्माजीका शिर शंकरजीने विचारको छोड़धड़ से त्रिशूल द्वारा काटकर अलग करदिया सो हेनाथ यह सब पराक्रम मेरी भुजानका है जिसके बश्य ब्रह्मादिक देवता हैं तो इतर मनुष्यों की क्या गणना है यद्यपि कोई गुणज्ञ विवेकी पंडित भी होय तो भी मेरे बस होतही सम्पूर्ण सुधबुध भूल अधर्मी होजाताहै॥

लोभ (तब लोभने अपनी स्त्री तृष्णाको बुलायी और उस

में पटके अभ्यन्तरसे लोभ क्रोध के स्वांग आय माथ नवाय प्रथम क्रोधने अपना पराक्रम सुनाया) ॥

अ--सुनते हैं कि महाराज भक्तिकी त्रास खाते हैं और श्रद्धा अरु शांति से भी भय मानतेहैं सो हे महाराज जिनके मुझ सरी से शूरवीर हैं उनकी मरजाद दाबने को बिचारी श्रद्धा और शांतिकी क्या सामर्थहै और मैं जिसके हृदय में जायकर बैठताहूं वह कैसा भी समर्थ क्यों न हो परंतु उसी क्षण उसको अंधा बहिरा गूंगा करदेताहूं और जो कदापि कोई पंडित वेद पुराणका जानकार होय तो उसकी बुद्धि और बिद्या अरु चतुराई धुवांही उड़ते दिखलाई देताहै ॥

भ--हे महाराज मेरे वस संपूर्ण संसारहै और मृत्यु कोन डरकर सबमेरेही पीछेफिरतेहैंऔर रातादिन यहीबिचार करते रहितेहैं कि किस रीत से बहुतसी द्रव्य मिलै और कहितेहैं कि ऐसी मिहनत करैं जिसमें गृह द्रव्य से भरलेवैं और यह भी कहिने लगतेहैं कि अभी तो इतना जमाकिया है और आगे इतना जमा करूंगा फिर उसद्रव्यको लेकर दूर दिशाको जाय वहांसे माल भरकर दूसरी दिशाको लेजाकर दूना करूंगा श्रद्धा अरु शांति हीन पुरुष रात्रि दिवस यही बिचारते रहतेहैं कोई यह कहिताहै कि कमर बांध राजाकी सदैव काल उपस्थित रहिकर ऐसी सेवाकरे कि आज्ञा भंग का दोष कभीनहीं आनेपावे जोकदापि ऐसीभी आज्ञा होवे कि गऊको जोतो और ब्राह्मणका घरलूटलेव तो भी इस आज्ञाको मस्तकपर रखकर बिलंब नहीं करेंगे और जो कदाच कोई सन्मुख हाथभी जोड़ेगा तौभी लड़कर उसको मार निकालेंगे अथवा आप वहां मर जावेंगे इसप्रकार राजाको रिझावेंगे तोबहुतसी जागीरें

पावैंगे ऐसा जो सोचते रहिते हैं उनके हृदयमें श्रद्धा और शांति कहांसे आवैगी कोईकहितेहैं कि धनवान के यहां खांद लगाय द्रव्य चुरालेनाचाहिये कोई कहिताहै कि बटोहीको मारकर लूटलेना चाहिये और भी जो अनेकन यत्नसोचतेहैं सो सबमुझीको लियेहुये सोचतेहैं नृत्य गान पढ़ने पढ़ाने चौदा विद्याके सीखनेमें मेराही आश्रय लियेहैं और जितने शरीर धारीहैं उन सबको मैंने अपने बसमें कर लिये हैं जब वे ऐसेही शोच में अपनी आयुष्यको व्यतीत करतेहैं तब श्रद्धा से स्वपने में भी भेटनहीं होने पाती फिर शांतिको किसरीत पाय सक्के हैं ॥

क्रोध-(सन्मुख खड़ाहोकर) हे राजन आप मेरे बल और पुरुषार्थको नीकी प्रकारसे जानते हैं इस हेतु मैं बहुत कुछ बर्णन नहीं करताहूं देखिये यद्यपि बिश्वामित्र जी परमपवित्र क्षत्रीथे तिनने मेरेबस होकर बड़ाभारी दोष ब्राह्मण बधका न मान बिचारको छोड़ बशिष्ठ ऋषीके एकसौ पुत्रोंको मारडाला दूसरे इंद्रजो सुरपति हैं तिन्होंने भी मर्यादको छोड़ बृत्रासुरादि दोनों ब्राह्मणोंको अपने हाथसे बधकिये तीसरे सबके पूज्य पिता ब्रह्माजीका शिर शंकरजीने बिचारको छोड़धड़ से त्रिशूल द्वारा काटकर अलग करदिया सो हे नाथ यह सब पराक्रम मेरी भुजानका है जिसके बश्य ब्रह्मादिक देवता हैं तो इतर मनुष्यों की क्या गणना है यद्यपि कोइ गुणज्ञ बिवेकी पंडित भी होय तो भी मेरे बस होतेही सम्पूर्ण सुधबुध भूल अधर्मी होजाताहै ॥

लोभ (तब लोभने अपनी स्त्री तृष्णाको बुलाया और उस

तेहैं कि विवेकके कारणसे मोहराज
शोच उत्पन्नहुआ है तिससे हे सुमुखी
तुम्हसे कहिताहूं कि जो यह संपूर्ण स
चौदा भुवन और लोकलोकों में वर्ण
मेरा उदर इतना बड़ा है कि पूर्ण नहीं
मेरा प्रतापरूपी मेघ ऐसा छायरहा
समादिक नक्षत्र व बोधचंद्र किंचितह
देते हैं ॥

तृष्णा--हेनाथ जो आपने अपनी कथाकही है
जिसप्रकार आपके प्रतापरूपी जाल में
सार फँसरहाहै तौभी इस आपकीदासी
नहीं पाताहै मेरा उदर इतना भारी है
कोई कोटिन ब्रह्मांड एकत्रकर उसमें
किंचित थाह नहीं मिलेगी जैसे कोई
नाही क्यों न जलावै परंतु उसको संत
रीत दिनप्रति में बढ़तीजाताहूं फिर
शांति कैसे आयसक्ती है-(उसी
हिंसाको बुलाया सो पट अंतरसे निक
मृत्यु समान भयानक स्वांगसे नृत्य
क्रोधने कहा) ॥

क्रोध--हे प्रिया तू जानती है कि संसार मुझसे
परंतु बहुत काल में मोहराज ने आज
है सो जो तुमभी सहाय करो तो महार
सिद्ध होजावें इसहेतु लोक वेदके यश
संशय शोच संकोच बिचारादिको
उसको नष्टकरो ॥

से तुरंतही मारोंगी और खगमृग जलचर कीटपतंगादि कों के शरीरको तो सहजही में भंग करसक्ती हों औ जिसके हृदयमें ज्ञान भी बसता होय उसको भी मैंहि हितकारकहूं–(इसरीति जब चारोंने वार्त्ताकी तब उन को मोहने आज्ञादी)॥

मोह–तुमचारों बंग देश को जाव और बनपड़े तो श्रद्धा और शांतिको छलबल से मारो और चैतन्यता से अपनाकार्य करियो–(इतना कहि उनको बीरा देय बिदाकिया सो जुहार कर सभा से बाहरचलेगये फिर मोहराज बहुत ही चिंता बढ़ीके श्रद्धा बुद्धि और बल से पुष्ट है इससे जो मेरी मिथ्या दुष्ट नामिक स्त्री बली और छलकारिक है उसको भेजूं तो वह अवश्य जाय उपनिषदके समीप से श्रद्धाको पकड़ लेवे और बांध कर मेरे समीप ल्यावै तो शांति जो अत्यन्तही सुकमार है श्रद्धा के बिरहसे दुखपाय सहजही बिना मारी मरजायगी ऐसा बिचार कर भरमावती सहचरी को तुरंतही बुलाया सोई बिचित्र स्वांग बनाय पट अंतर से भरमावती आयगई तब राजाने उसको आज्ञादी कि तुम शीघ्रही मिथ्या के समीप मेरा अभिलाष जनाय आदर पूर्वक मनाय ल्याव इतना सुन सहचरी पटांतरमें मिथ्या के स्वांग के समीप जाय बंदन कर मोहराज का संदेशा कहिने लगी ॥

रमावती–हे प्रिया तुमको राजाने बड़ी अभिलाष सहित बुलायाहै और कोई कार्यभी है इस हेतु तुमचलो ॥

मिथ्या–हे सखी बहुत काल हुआ जब से मैं राजासे न्यारी रहीहूं इसहेतु अब मुझको जाने में भारी लज्याहोती है कि किस प्रकारसे राजाके समीप जाऊं और पूछने [illegible]

अंगको मोड़कर जमुहाई लेय नेत्र उनींदे कर लिये और अंगों में आलस्य जनाया) ॥

भरमावती—हे प्रिया किस कारण तुमारे अंग शिथिल हो आलस हुआ ॥

मिथ्या--हे सखी जिस स्त्रीकी एकपती से प्रीति होती है उसको आलस और नींद नहीं आती है मेरी सदैवकाल बहुत पतियों से रति रहती है इस हेतु एकक्षण भी मुझको सावकाश नहीं मिलता इसीसे नींद आती है ॥

भरमावती-हे प्रिये जो जो तुमसे प्रीति मानते हैं उनके नामकहो॥

मिथ्या--(हँसकर) हे सखी प्रथम तो मोहराज हैं दूसरे काम ३ क्रोध ४ मद ५ मान ६ दंभ ७ लोभ ८ मत्सर आदि जो जो प्रवर्ति कुलमें है वहसब मुझसे प्रीति रखकर मेराही सुख चाहिते हैं ॥

भरमावती--हे प्रिय मोहराजके ईर्षा नामिक स्त्री है अरु कामके रति है लोभकी तृष्णाहै क्रोधके हिंसाहै कलियुगके दुर्गतिहै सो ये सब अपनी २ स्त्रीसे प्रीति रखते हैं फिर तुम से किसकारण रति मानते हैं सो वर्णनकरो ॥

मिथ्या--हे सखी यद्यपि सबके गृहमें स्त्री है परंतु मेरी मनमोहनी छबिपर संपूर्ण संसार मोहित होरहाहै इससे अपनी सुध बुध बिसराय बिनाबिचार मुझसे रमते हैं ॥

भरमावती-(आशीर्वाद देकर) हेप्रिये ईश्वर तुम्हारी प्रीति दिन दिन दूनी सबपतियोंसे बढ़ावे अब शीघ्रही चल महाराज तेरी बाट ऐसे देखरहे हैं जैसे चंद्रोदयको चकोर चाहिती है (ऐसी कहि दोनोंपट अंतर बातेंकर सभा में आयनृत्य करनेलगीं)॥

मोह--(इस सुंदर स्वांगको देख हर्ष सहित) हे प्रिय प्राण प्यारी आज पर्यंत तुम बिन मैं दुखी था अब तुम्हारा आगमन सुखकारी हुआ (यहकहि आदर सहितमोद

में बैठाल चूमकर दृढ़ आलिंगन किर
बैठमान से बोली ॥
मिथ्या--(मुसक्याकर) मुझे किस कार्यको बु
मोह--हे भामिनी तुम अच्छी प्रकारसे जान
संपूर्ण कार्य तुम बिना फीके थे इससे
हृदयमें बसतीहो एक क्षण भी नहीं
जिस हेतु मैंने बुलायाहै सो मानो आज
होगया मैंने सुनाहै कि श्रद्धा शांतिसा
समीप गई है इसहेतुके उसको बिवेकसे
प्रकाश चाहितीहै उसके उदयहोतेही कु
जायगा इससे चिन्ता बहुत है इस कार
वहां जाकर छल बलसे पकड़ चोटीधर य
बन्दीगृहमें रहै जिससे हमारा क्लेशमिटै
मिथ्या--हे राजन यह कौन बड़ा कार्यहै आपके
शास्त्ररूपी ऐसा उपायहै कि उसको
पाखण्डमें रखतीहूँ जिससे बिवेक को
और जो उपनिषद्का चन्द्रतुल्यप्रकाश
किये देतीहूँ फिर श्रद्धाकी कितनी बातें
(ऐसा सुन मोह हर्ष कोपाय हृदयसेलगा
मोह--हे प्यारी तू बुद्धि बल साहस सहित च
सब प्रकारसे मुझे निश्चयहै कि जो का
होगा वह तुमसे होजायगा (ऐसा क
प्यारी रम्भा कहि मुखचूम कुचको स्पर्श
मिथ्या-हे राजन सभाके बीच ऐसा करने से
इसे जो कदाच आपकी ऐसीही इच्छ
दाइक रंग महलको चालिये ॥
(यह मिथ्याके बचन सुनकर मोहराज
पूर्णकर शयनको चला इतिद्वितीयक

